Registration:-

Faculties and Professionals- 500/-, Students- 200/-

Guideline for Research Paper/Case Studies/Reports

- Language of presentation may Hindi or English
- Last date of abstract submission and registration is 15th May. On spot registration is also Possible.
- Send your abstract through email – pfcgexecutiveboard@gmail.com

Patron

Prof. Bansh Gopal Singh
Vice Chancellor
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur(C.G.)

Convener

Dr. Basant Kumar Sonber
President of Psychological Forum Chhattisgarh, Raipur (C.G.)

Co-conveners

Dr Gautami Bhatpahari (Cont.- 9977911633)
Dr. Jay Singh (Cont.- 9407746100)

Organizing Secretary

Dr. S. Rupendra Rao
HOD, Dept. of Psychology
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur (C.G.)

Organizing Committee

Dr. Trpti Biswas
Dr. Pratibha Sharma
Dr. Vaishali Gautam Hirwey
Miss. Lalita Sahu
Dr. Sharda Ghoghare
Dr. Ashutosh Deushkar
Dr. Roli Tiwari
Dr. Gurpreet Kaur
Dr. Deepak Pandey

1st Annual Conference

Of

PSYCHOLOGICAL FORUM CHHATTISGARH

Regd. No. : 122201896610 Date : 18/05/2018

Dated- 18th May 2019

On
Scope, Challenges and Development of Psychology in Chhattisgarh

Organized by
Department of Psychology
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University
Chhattisgarh, Bilaspur (C.G.)

Scientific enquiry of idealism and realism has to reach a dynamic balance. The motive to find a fresh equipoise should address the requirement of society, groups and also the individual. Researchers who contribute in different domains of knowledge and research traditions should show the seed of hope for dynamic conversation and collaboration with policy makers and practitioners, with the intent of strengthening research as well as practice through applying available expertise for real world scenario.

India as a nation with diversity and population incorporates different cultures, religions, languages, caste, communities and social groups. It is not only a challenge for social scientists to ascertain application of findings at large, but it also provides big opportunity to utilize their capacity of investigation for wellbeing of humanity. Chhattisgarh state has all the possibilities for the development of Psychological investigation on real problems. There is a dearth of social of society and very less or no uses of the find ingsin actual conditions. Other relevant issues such as lack of awareness in the youth of this state towards careerbuilding in various fields, lack of self-assertiveness to realize successful participation in competition at large scale, diffidence to go

out of their native place should be discussed and needed to resolve. Therefore,sensitization about accountability towards humanity is much needed in servers of Psychology. It can only beensured through active participation in realistic studies and a positive mind set toward implication of results as much as possible.

Psychological Forum Chhattisgarh was established with the aims to counter the above said problems and many more issues related to human being. It is our initial endeavor to share the views through organizing annual meet and conference. As we can make our work plan and may curve the attention of researchers, NGOs, policy makers and educators towards actual problems of future solders of Chhattisgarh which is a really less studied part of India. Hopefully, esteemed scholars serving for wellbeing of humanity shall make this journey wider and global through their valuable presence and contribution of ideas.

Sub Themes:-

- Status of Psychology in Chhattisgarh
- Challenges of Psychologists in Chhattisgarh
- Govt. initiatives to insure Psychological health
- Development of youth and need of Psychological intervention.
- Old age problems and role of Psychologists
- Socio-economic status and mental health
- Environmental circumstances and mental health

- विश्वविद्यालय के संदर्भ में -

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका अपरिहार्य है। मनुष्य के जीवन में आने वाली बाधाऐं, उसकी शैक्षिक पिपासा को सीमित न कर सके एवं मनुष्य की शैक्षिक उन्नति सदैव बनी रहे इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु मुक्त विश्वविद्यालय में प्रचलित शिक्षा-पद्धति की महती भूमिका है। छत्तीसगढ के बिलासपुर में स्थित पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, भारत का 11वाँ राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है इसकी स्थापना छत्तीसगढ़ शासन अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा की गयी है। यह अधिनियम 20 जनवरी 2005 में लागू हुआ। विश्वविद्यालय का नाम महान स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, समाज सुधारक एवं छत्तीसगढ़ के गाँधी के रुप में विख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा जी की स्मृति को आलोकित कर रहा है।

विश्वविद्यालय 'स्वाध्यायः परम् तपः' के ध्येय वाक्य के साथ 'उच्च शिक्षा आपके द्वार' मूल वाक्य को चरितार्थ करते हुए छात्र हित एवं विकास की ओर निरन्तर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 07 क्षेत्रीय तथा एक उप क्षेत्रीय केन्द्र एवं 136 अध्ययन-केन्द्र संचालित हैं। विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर बिलासपुर लगभग 71 एकड़ में फैला हुआ है।

- संगोष्ठी के विषय में -

महात्मा गाँधी भारत वर्ष की विश्व को एक ऐंसी देन है, जिसके समान कोई दुसरी विभूति नही है। उन्नीसवीं सताब्दी का यह ध्रुवतारा सामाजिक विज्ञान, अपितु वैश्विक मानव समाज को अपनी वैचारिक उर्जा से भर देने वाला ''महात्मा'' अपने असाधारण अवदान के लिए सदैव स्मरण किया जायेगा।

गाँधी चिंतक सीतारमैय्या जी का कहना है कि गाँधीवादी सिद्धांतों एवं मतों का, नियमों या व्यवस्थाओं का आदेशों एवं विषेधों का समुह नहीं है, वरन जीवनशैली है। यह जीवन ही जीवन के समस्याओं के प्रति एक नई धारणा का संकेत करता है, या किसी पुरानी धारणा की पुनः व्याख्या करता है, और वर्तमान समस्याओं के लिए पुरातन समाधान प्रस्तुत करता है (अवस्थी, के.पी., 2012-13).

गाँधी के चिंतन के विषय में मुख्यतः दो विचार-धाराएँ पायी जाती है। पहली समग्र मानव जाति से संबंधित थे, तथा सभी संप्रदाय एवं मत मतांतरों से ऊपर उठे हुए थे। दूसरी उनकी विचारधारा यह है कि उनके विचारों पर हिंदू धर्म का गहरा प्रभाव था और ये हिंदू धर्म के प्रति निष्ठावान थे (नारायण,जे.पी., 1988).

गाँधी जी को धार्मिकता अपने परिवार तथा वैष्णव पृष्ठभूमि अपनी माता से प्राप्त हुई थी। उन्होंने वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता, वेदांत, रामायण आदि धर्म ग्रंथ से प्रेरणा प्राप्त की। उन्होंने भगवान राम को ऐतिहासिक पुरुष तथा अनादि ईश्वर दोनों रूपों में देखा किंतु वे ईसाई तथा मुस्लिम धर्म से भी अछूते नहीं रहे (नारायण,जे.पी., 1999).

- संगोष्ठी का उप-विषय-

- महात्मा गाँधी और भारत में सामाजिक विज्ञानों की शिक्षा एवं अनुसंधान।
- ज्ञान की सांस्कृतिक संबंधता / असंबंधता।
- समाज एवं सामाजिक विज्ञानों में स्वदेशी / विदेशीकरण।
- व्यक्तिगत जीवन की सापेक्ष जीवन का संबंधपूर्ण दर्शन।
- विचार एवं वास्तविकता की विविध आयाम : उपयोगिता / आदर्श एवं मूल्य / नैतिक एवं आचार संबंधी।
- समस्याओं की जड़ और समाज विज्ञान- गाँधी दर्शन :-
  - गाँधी जी एवं समाज दर्शन
  - गाँधी जी एवं ग्राम स्वराज
  - गाँधी जी का शिक्षा दर्शन
  - गाँधी जी की भाषा नीति
  - गाँधी जी का अर्थ दर्शन
  - गाँधी जी और कुटीर उद्योग
  - गाँधी जी और नारी सशक्तीकरण
  - गाँधी जी और दलित उद्धार
  - गाँधी जी के अहिंसा दर्शन की प्रासंगिकता
  - गाँधी जी की न्यास नीति
  - गाँधी जी से संबंधित अन्य विषय

- विशेष -

टी.ए. / डी.ए. एवं आवास व्यवस्था : प्रतिभागी अपनी यात्रा व्यय की व्यवस्था अपनी संस्थानों से करेंगे तथापि राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जायेगी। आवास व्यवस्था हेतु प्रतिभागियों को पूर्व में सूचित करना होगा जिससे कि उनके लिए सशुल्क आवास व्यवस्था सुनिश्चित हो सके, अन्यथा आवास व्यवस्था उन्हें स्वयं करनी होगी।

- शोध-आलेख सारांश हेतु निर्देश -

इच्छुक प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपना शोध-आलेख सारांश (Abstract) अधिकतम 300 शब्दों में दिनाँक 5 अक्टूबर, 2019 तक pssoumgseminar@gmail.com पर भेजें।

शोध-आलेख सारांश एवं संपूर्ण शोध हेतु फॉन्ट साइज निम्नानुसार भेजें -

हिंदी हेतु	कृतिदेव 11	(Font Size-14)
अँग्रेजी हेतु	Times New Roman	(Font Size-12)

- शोध-आलेख सारांश उपरोक्त फॉन्ट के अलावा अन्य फॉन्ट में स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
- आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक 5 अक्टूबर, 2019
- संपूर्ण शोध भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक 10 अक्टूबर, 2019

- पंजीयन-प्रक्रिया -

1. संगोष्ठी में सामान्य छात्र, शिक्षक, सामाजिक संस्थाएँ प्रतिभागी हो सकते है।
2. इच्छुक प्रतिभागी पंजीयन प्रपत्र, पंजीयन शुल्क के साथ दिनांक 10 अक्टूबर, 2019 तक जमा करना अनिवार्य होगा।
3. पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय मुख्यालय में 'महामाया परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन' के कक्ष क्र. 08 में दिनांक 10 अक्टूबर, 2019 तक उपलब्ध रहेगी।
4. स्थल पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय में आयोजन स्थल के पंजीयन काऊंटर में दिनांक 15 अक्टूबर, 2019 को उपलब्ध रहेगी।
5. स्थल पंजीयन कराने वाले प्रतिभागीयों को पंजीयन-किट प्रदान नहीं किया जायेगा। उन्हें केवल प्रमाण-पत्र प्रदान किया जायेगा।
6. ऑनलाइन एवं चालान द्वारा शुल्क जमा करने हेतु बैंक ऑफ बडौदा : खाता का नाम - National Seminar खाता क्र. 58100100001412 (IFSC - BARB0BIRKON में जमा कर सकते है।

पंजीयन शुल्क :

क्र.	पंजीयन शुल्क का विवरण	10 अक्टूबर तक	स्थल पंजीयन
1	प्राध्यापक गण / अन्य	800/-	1000/-
2	विद्यार्थी / शोधार्थी	600/-	800/-

- पंजीयन-पपत्र -

नाम : ....

पदनाम : .... लिंग : ....

संस्थागत पता : ....

....

....

मोबा. : ....

ई-मेल : ....

शोध-पत्र का शीर्षक : ....

क्या आपको आवास की आवश्यकता है? हाँ / नहीं : ....

भुगतान की कुल राशि (रु.में) : ....

भुगतान का माध्यम (नगद / डिमांड ड्राफ्ट / चालान)..........................

रसीद क्र. .... ड्राफ्ट क्र. .... चालान क्र. ....

बैंक का नाम : .... दिनांक : ....

हस्ताक्षर ....

भरा हुआ पंजीयन प्रपत्र सशुल्क पंजीयनकर्ता के पास जमा करायें। यदि आवश्यक हो तो पंजीयन फॉर्म की छायाप्रति का उपयोग पंजीयन हेतु किया जा सकता है। प्रतिभागीगण संगोष्ठी में पंजीयन के लिए पंजीयन प्रपत्र एवं चालान प्रारुप वेबसाइट www.pssou.ac.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

- प्रस्तावित वक्तागण -

प्रोफेसर गिरीश्वर मिश्र
पूर्व कुलपति, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रोफेसर अनिल दत्त मिश्रा
डायरेक्टर, सुलभ इंटरनेशनल

प्रोफेसर आनंद कुमार
सेवा निवृत्त प्राध्यापक, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई-दिल्ली

डॉ अरविन्द कुमार मिश्रा
प्राध्यापक, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई-दिल्ली

प्रोफेसर मनोज कुमार
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रोफेसर आर.पी. द्विवेदी
प्राध्यापक, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)

डॉ तीर्थेश्वर सिंह
प्राध्यापक, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक म.प्र.

प्रोफेसर पुष्पा मोटियानी
विभागाध्यक्ष, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

प्रोफेसर एम.पी. शर्मा
उदयपुर

प्रोफेसर बालकृष्ण कछवाहा
पूर्व प्राध्यापक, दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

- बिलासपुर शहर एक परिचय -

बिलासपुर छ.ग. राज्य के 27 जिलों में से एक है। बिलासपुर राज्य की राजधानी रायपुर से लगभग 111 कि.मी. उत्तर मे स्थित है। यह राज्य की न्यायधानी एवं प्रशासनिक दृष्टि से राज्य का दूसरा प्रमुख शहर है। बिलासपुर कृषि के क्षेत्र में चावल की विशेष किस्म (दुबराज, विष्णुभोग) आदि के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ के हाथकरघा उद्योग से बनी कोसे की साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। यहाँ की स्थानीय संस्कृति में सुआनृत्य, भोजली, राउत नाचा, पोला इत्यादि प्रमुख रुप से मनाए जाते हैं। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से ऊर्जा के क्षेत्र में बिलासपुर संभाग का देश मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके आसपास के क्षेत्रों में कई विद्युत गृहों में लगभग 10,000 से 15,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। पर्यटन के दृष्टिकोण से यहाँ शहर में अनेक स्थल हैं जिसमें विवेकानंद उद्यान, ऊर्जा पार्क, स्मृति वन, यातायात पार्क, बिलासा ताल आदि है। शहर के निकटतम दर्शनीय स्थल रतनपुर महामाया मंदिर, मल्हार, अमरकंटक, कानन पेण्डारी (मिनी जू), तालागाँव और चैतुरगढ़ प्रसिद्ध हैं।

शिक्षा की दृष्टि से बिलासपुर में राज्य के चार प्रमुख विश्वविद्यालय हैं इसके अतिरिक्त इंजी., चिकित्सा एवं कृषि महाविद्यालय स्थित हैं।

- मुख्य संरक्षक -

प्रो. बंश गोपाल सिंह
माननीय कुलपति
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- संरक्षक -

डॉ. इंदु अनंत
कुलसचिव
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- संयोजक -

डॉ. अनिता सिंह
31anitasingh@gmail.com
Mob. +91 9827118808

- सह संयोजक -

डॉ. प्रीतिरानी मिश्रा
preemishra07@gmail.com
Mob. +91 7017128494

- आयोजन सचिव -

डॉ. दीपक पाण्डेय
deepakpandey985@gmail.com
Mob. +91 9827955379

- आयोजन समिति के सदस्य -

डॉ. बीना सिंह
डॉ. प्रकृति जेम्स
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
श्री संजीव लवानियाँ
श्री रेशमलाल प्रधान
डॉ. एस.रुपेन्द्र राव
डॉ. पुष्कर दुबे

- आवागमन की सुविधा -

छ.ग. राज्य के सभी शहरों को जोड़ने के लिए यहाँ से बस सेवाऐं हैं व बिलासपुर रेल्वे स्टेशन छ.ग. के व्यस्ततम रेल मार्ग में से एक है। दक्षिण पूर्व मध्य रेल्वे जोन का मुख्यालय बिलासपुर में स्थित है। बिलासपुर का हवाई अड्डा चकरभाठा में स्थित है किन्तु दैनिक हवाई सेवा के लिए निकटतम हवाई अड्डा रायपुर है।

- बिलासपुर आगमन -

बिलासपुर आगमन : बिलासपुर ट्रेन मार्ग से देश के सभी शहरों से जुड़ा है। यह हावड़ा-मुम्बई मुख्य मार्ग पर स्थित है। हवाई मार्ग हेतु नजदीक एयरपोर्ट रायपुर 130 किलोमीटर दूर है।

दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

15-16 अक्टूबर, 2019

विषय

महात्मा गाँधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा

प्रति,
....
....
....

आयोजक

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

www.pssou.ac.in
pssoumgseminar@gmail.com

विश्वविद्यालय

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की स्थापना छत्तीसगढ़ शासन के अधिनियम क्र. 26/2004 द्वारा की गई है। इस विश्वविद्यालय का क्षेत्राधिकार संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य है। राज्य में इस विश्वविद्यालय के छः क्षेत्रीय-केंद्र - बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, जगदलपुर, अम्बिकापुर तथा जशपुर एवं एक उप-क्षेत्रीय केंद्र- कांकेर में है। संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में विश्वविद्यालय के 181 अध्ययन-केंद्र संचालित हैं। विश्वविद्यालय इन केंद्रों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा-प्रणाली के आधार पर राज्य के दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों तक गुणवत्तायुक्त उच्च-शिक्षा प्रदान कर रहा है।

संगोष्ठी के विषय में

समुद्रस्योत्तरे भागे, हिमाद्रेश्चैव दक्षिणे।
वर्षं तद् भारतं नाम, भारतीयत्रसंततिः।।

भारत उस देश का नाम है जो अपने में एक विशिष्ट आध्यात्मिक संस्कृति को संजोये हुए है। 'भा' का तात्पर्य प्रकाश से है, तथा 'रत' का तात्पर्य संलग्न होना है, अर्थात् ऐसा देश जो प्रकाश (ज्ञान) में रत है। भारत ने बहुत पहले यह उद्घोष किया - 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय', 'मृत्योर्मा अमृतं गमय', अर्थात् असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ना। भारत ने इसी को जीवन का मूलमंत्र माना, और विश्व को भी भारत ने यही संदेश दिया है। भारत में आध्यात्म, धर्म एवं संस्कृति का ऐसा विशिष्ट समन्वय है कि इनका स्वरूप एक जैसा ही जान पड़ता है। जीवन के चार पुरुषार्थ : धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष बताये गये हैं। यहाँ धर्म और मोक्ष आध्यात्मिक जीवन के पुरुषार्थ हैं तथा अर्थ और काम भौतिक जीवन के।

अध्यात्म का उद्देश्य है कि व्यक्ति आन्तरिक दृष्टि से - भावनात्मक स्तर पर अपनी उत्कृष्टता सुरक्षित रखने एवं बढ़ा सकने में समर्थ बना रहे, और बाह्य दृष्टि से - क्रिया स्तर पर आदर्शवादिता भरे संयमित, मर्यादित एवं लोकमंगल के लिए क्रिया-कलाप अपनाये रहने की तत्परता बरते। अध्यात्म का अर्थ है अपने भीतर के चेतन तत्व को जानना, मानना और दर्शन करना अर्थात् अपने आप के बारे में जानना या आत्मप्रज्ञ होना।

चारों पुरुषार्थों में धर्म को प्रथम स्थान दिया गया है। 'धर्मो धारयते प्रजाः', धर्म वह है जिसे धारण किया जाता है एवं जो धारण करता है। 'धर्मो रक्षति रक्षितः', यह कहकर धर्म की महत्ता स्थापित की गई है। सुदूर अतीत में 'सर्वभूतहितेरता' एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की जो उद्घोषणायें की गई हैं वे समस्त एक धार्मिक-चेतना का ही परिणाम हैं। अध्यात्म तत्व की अनुभूति के लिए धर्म मार्ग है। धर्म पूजा पद्धति से भिन्न है, सभी पूजा पद्धतियों में एक ही धर्म तत्व की आराधना है। भौगोलिक एवं जीवन भिन्नता के फलस्वरूप, धर्म एक होते हुए भी, संस्कृतियाँ एवं अर्चना पद्धतियाँ भिन्न-भिन्न हो गयीं।

मैं समझता हूँ, धर्म का यही स्वरूप आध्यात्मिक, सार्वजनिक, सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक तथा शाश्वत है। यह धर्म सबका है, इसे किसी पंथ, मत या संप्रदाय के दायरे में नहीं बाँधा जा सकता। भारत का पुरातन धर्म (वेद) कहता है : 'एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति।' इसमें दुराग्रह, संकीर्णता, सांप्रदायिकता का प्रश्न ही नहीं।

भारतीय संस्कृति और जीवन पद्धति, कला, साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में धर्म का प्रभाव सबसे अधिक देखा जाता है। धर्म भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्र का प्राण है। विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में हमारी हिन्दू संस्कृति अपनी विकास यात्रा के मध्य अनेक वैचारिक तथा मूल्यगत द्वन्द्व को झेलते तथा परिवर्तन के कई पड़ावों से गुजरते हुए आज भी राष्ट्र में अपनी अनेकता में एकता के साथ जीवंत है।

भारत की आर्थिक, सांस्कृतिक और सभ्यतामूलक बुनियाद भारत का ग्रामीण स्वरूप है जिसने भाषा, गीत, परंपराओं, रीति-रिवाजों एवं विभिन्न त्योहारों के रूप में भारतीय संस्कृति को अपनी आत्मा में संजोये रखा है। इतनी व्यापक एवं विशाल भावना कहीं अन्यत्र नहीं मिलती। भारतीय संस्कृति केवल भारत के ही नहीं वरन् विश्व के मानव मात्र के लिए मंगलमय कामनाओं के साथ सबको अपना परिवार मानती है।

'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग हमें वैदिक काल से प्राप्त होता है। ऋग्वेद में ऋषि प्रार्थना करते हैं कि हे सर्व शक्तिमान प्रभु! आप मुझ पर ऐसी कृपा करें कि राष्ट्र से भूख, प्यास, ग़रीबी मिटा सकूँ। हमारा राष्ट्र सुखी हो, समृद्धशाली, यशस्वी हो, और मैं राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जा सकूँ (ऋग्वेद 7/70/6)। वैदिक काल से ही हम सभी में राष्ट्र की भूमि, जन-समूह, संस्कृति, समानता, जीवन-मूल्यों, इतिहास, धर्म, साहित्य, कला, राजनीति, इत्यादि के प्रति गरिमा एवं महिमा का एक नैसर्गिक स्वाभिमान मिलता है।

'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।' अथर्ववेद के इस सूक्त में भूमि को माता एवं स्वयं को उसका पुत्र मानने का भाव भारत की श्रेष्ठ परंपरा है परंतु आज यह शब्द अनेक जटिलताओं तथा विवादों से ग्रस्त हो गया है। भारत के संदर्भ में 'राष्ट्र' शब्द संपूर्ण पृथ्वी का द्योतक है, अर्थात् भूमि को माता मानते हुए एक पुत्र की भाँति इसका संरक्षण एवं संवर्धन करने का दायित्व इसके जन (निवासियों) को दिया गया है। इसके विपरीत, जर्मनी की राष्ट्र की अवधारणा 'स्व-श्रेष्ठता के सिद्धांत' पर आधारित थी जिसका उद्देश्य विश्व के अन्य प्रजाति के लोगों को नीचा दिखाते हुए स्वयं को श्रेष्ठ प्रमाणित करना था। जबकि भारत में राष्ट्र की अवधारणा 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' पर केंद्रित है, क्योंकि भारत में राष्ट्र का स्वरूप अत्यन्त व्यापक है। इसमें संपूर्ण धरा के हित को आधार मानकर अपनी सीमाओं को विस्तृत करते हुए पूरे विश्व को अपना परिवार माना गया है :

अयं निजः परोवेति गणनालघुचेतषाम्।
उदारचरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

स्वामी विवेकानंद ने इसी राष्ट्रीय भावना को जागृत करने तथा राष्ट्र की तन, धन, मन सर्वतोभावेन रक्षा में सन्नद्ध हो जाने की प्रेरणा देते हुए - 'राष्ट्र देवो भव' का मंत्र दिया जिससे प्रेरणा पाकर लोगों ने मातृभूति की रक्षा के लिए अदम्य भावना से सर्वात्मना एकजुट हो राष्ट्र के शत्रु का मुकाबला किया। स्वामी विवेकानन्द ने 'राष्ट्र' की अवधारणा के संदर्भ में कहा है कि राष्ट्र के प्रति अपनी सत्यता एवं निष्ठा का पालन करना समस्त देवी-देवताओं के प्रति आस्थावान होने से अधिक श्रेयस्कर है। हम सब भारतवासियों में आध्यात्मिक धर्म एवं संस्कृति का ही प्रभाव रहा कि हम अपने में दूसरे राष्ट्र के प्रति हीनता, हेयता, घृणा, द्वेष तथा दुर्भाव नहीं पाते। यह राष्ट्रीय भावना विश्व, मानव तथा समुदाय के कल्याण की चिंतक रही है। देश के सर्वतोमुखी विकास के लिए ऊँच-नीच, छुआछूत, अगला-पिछड़ा का भाव पूर्णतः त्याज्य है। इसमें राष्ट्र समष्टिनिष्ठ है, सबका विकास तथा सबका कल्याण अभीष्ट है।

आज धर्म, संस्कृति और राष्ट्र की भारतीय अवधारणा के लिए, तथा राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए खतरा बढ़ रहा है। शुद्ध भारतीय होने का तात्पर्य ही वैश्विक मानव बनना है। प्रत्येक भारतीय सभी मतों का आदर करता है, सह-जीवन के प्रति संकल्पित होता है तथा अपना उदात्त जीवन जीता है जिसमें परस्पर द्वंद्व का कोई स्थान नहीं होता है।

इस संगोष्ठी में विद्वानों के विचार मंथन से धर्म, भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्र के वास्तविक स्वरूप को समझने और इनके मध्य स्वस्थ तालमेल का एक व्यापक अवसर मिलेगा जिससे भारत के साथ संपूर्ण विश्व के कल्याण का मार्ग निकल सकेगा और विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त होगा।

संगोष्ठी की विषयवस्तु

1. अध्यात्म तथा धर्म :

1.1 अध्यात्म, मानवता एवं सृष्टि, 1.2 अध्यात्म एवं धर्म, 1.3 अध्यात्म एवं जीव-जगत्, 1.4 भारत में धर्म की अवधारणा, 1.5 धर्म एवं संस्कृति, 1.6 भारतीय परिप्रेक्ष्य में धर्म, 1.7 वर्तमान संदर्भ में धर्म, 1.8 धर्म एवं राष्ट्र तथा वैश्विकता।

2. संस्कृति :

2.1 भारतीय संस्कृति के गौरवशाली तत्व, 2.2 सनातन भारतीय संस्कृति : संप्रत्यय एवं स्वरूप, 2.3 भारतीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक प्रतिमान, 2.4 भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं वसुधैव कुटुम्बकम्, 2.5 भारत में सांस्कृतिक क्षरण/विचलन, 2.6 इतिहास के संदर्भ में भारतीय संस्कृति में विचलन का स्वरूप यथार्थ एवं लक्ष्य।

3. राष्ट्र एवं वैश्विकता :

3.1 राष्ट्र की अवधारणा और भारतीय चिंतन, 3.2 राष्ट्र के आवश्यक तत्व, संप्रत्यय, स्वरूप, 3.3 राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद, 3.4 भारत में राष्ट्र की संकल्पना तथा फासीवाद, नाजीवाद से भिन्नता, 3.5 सांस्कृतिक प्रवाह में राष्ट्रीय तत्व एवं राष्ट्र से परे जगत्/विश्व ; वैश्विकता का व्यावहारिक पक्ष, 3.6 भारतीय संविधान में राष्ट्र तत्व का स्वरूप, 3.7 साम्यवाद, समाजवाद एवं एकात्म-मानववाद के संदर्भ में राष्ट्र।

4. हमारी पहचान :

4.1 पहचान के स्रोत के रूप में धर्म/संस्कृति एवं राष्ट्र, 4.2 पहचान संकट, संक्रमण काल में पहचान संकट, 4.3 भारतीयता बनाम जाति, प्रांत, पंथ, विश्वास इत्यादि।

आलेख/शोध-पत्र हेतु आमंत्रण

इच्छुक प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपना शोध-आलेख/सारांश (Abstract) अधिकतम 300 शब्दों में दिनांक 6 नवम्बर, 2017 तक shashwatbharatseminar@gmail.com पर भेजें।

शोध- आलेख सारांश निम्नानुसार फॉन्ट में भेजें -

हिंदी हेतु	कृतिदेव 11	(Font Size-14)
अँग्रेज़ी हेतु	Times New Roman	(Font Size-12)

पूर्ण आलेख/शोध-पत्र भेजने की अंतिम तिथि : 12 नवम्बर, 2017

बिलासपुर आगमन

बिलासपुर आगमन : बिलासपुर ट्रेन मार्ग से देश के सभी शहरों से जुडा है। यह हावड़ा-मुम्बई मुख्य मार्ग पर स्थित है। हवाई मार्ग हेतु नजदीक एयरपोर्ट रायपुर 130 किलोमीटर दूर है।

टी.ए./डी.ए. एवं आवास व्यवस्था : प्रतिभागी अपनी यात्रा व्यय की व्यवस्था अपनी संस्थानों से करेंगे तथापि राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके भोजन एवं यातायात की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जायेगी। आवास व्यवस्था हेतु प्रतिभागियों को पूर्व में सूचित करना होगा जिससे कि उनके लिए आवास व्यवस्था सुनिश्चित हो सके, अन्यथा आवास व्यवस्था उन्हें स्वयं करनी होगी।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क

क्र.	पंजीयन शुल्क का विवरण	12 नवंबर तक	स्थल पंजीयन
1	प्राध्यापक गण	1000/-	1500/-
2	विद्यार्थी / शोधार्थी	300/-	500/-
3	अतिथि प्रतिभागी :	निःशुल्क	निःशुल्क

1. पंजीयन शुल्क का ड्राफ्ट : कुलसचिव, पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर के पक्ष में बिलासपुर में देय हो, बनवायें।
2. पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय में पंजीयन स्थल पर 18 नवंबर, 2017 को उपलब्ध रहेगी।
3. ऑन लाइन एवं चालान द्वारा शुल्क जमा करने हेतु बैंक ऑफ बडौदा खाता क्र. 58100100000443 (IFSC Code: BARB0BIRKON MICR-495012006) में जमा कर सकते है। zero

पंजीयन-प्रपत्र

नाम : डॉ. / प्रो. / श्री / श्रीमती ....

पदनाम : .... लिंग : ....

संस्था का नाम : ....

पता : ....

....

....

दूरभाष क्र : .... मोबाइल : ....

ई-मेल : ....

क्या आप राष्ट्रीय संगोष्ठी में आलेख पढ़ेंगे ? हाँ / नहीं : ....

क्या आपको आवास की आवश्यकता है ? हाँ / नहीं : ....

भुगतान की कुल राशि (रु में) : ....

भुगतान का माध्यम (नगद / डिमांड ड्राफ्ट / चालान) ....

रसीद क्र. .... ड्राफ्ट क्र. .... चालान क्र. ....

बैंक का नाम : .... दिनांक : ....

हस्ताक्षर

भरा हुआ पंजीयन प्रपत्र सशुल्क पंजीयनकर्ता के पास जमा करायें। यदि आवश्यक हो तो पंजीयन फॉर्म की छायाप्रति का उपयोग पंजीयन हेतु किया जा सकता है। प्रतिभागीगण संगोष्ठी में पंजीयन के लिए पंजीयन प्रपत्र एवं चालान प्रारूप वेबसाइट www.pssou.ac.in से भी डाउनलोड कर सकते है।

संभावित वक्तागण

प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलपति, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी वि.वि., वर्धा

प्रो. ए.डी.एन. बाजपेयी, कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

प्रो. जे. एस. राजपूत, पूर्व निदेशक, NCERT, नई दिल्ली

श्री इन्द्रेश जी, सामाजिक कार्यकर्ता, नई दिल्ली

सुश्री निवेदिता भिड़े, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विवेकानन्द केंद्र, कन्याकुमारी

प्रो. हितेश शंकर, संपादक, पांचजन्य (साप्ताहिक), दिल्ली

प्रो. ओमप्रकाश वर्मा, पूर्व अध्यक्ष, निजी विश्वविद्यालय नियामक आयोग, रायपुर

प्रो. मुकुन्द हम्बर्डे, पूर्व महानिदेशक, छ.ग. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, रायपुर

डॉ. लक्ष्मण शरण मिश्र, पूर्व प्राध्यापक, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर

डॉ. महेशचन्द्र शर्मा, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता, नई दिल्ली

श्री कनक तिवारी, वरिष्ठ अधिवक्ता, छ.ग. उच्च न्यायालय, बिलासपुर

श्री हिमांशु द्विवेदी, संपादक, हरिभूमि, रायपुर

श्री गोपालजी व्यास, पूर्व राज्यसभा सदस्य, रायपुर

श्री नंदकिशोर शुक्ल, स्वतंत्र पत्रकार, सरकण्डा, बिलासपुर

श्री जगदीश उपासने, समूह संपादक, पांचजन्य, नई-दिल्ली

श्री सच्चिदानंद जोशी, सचिव, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई-दिल्ली

श्री रमेश नैय्यर, वरिष्ठ पत्रकार, रायपुर

आयोजन-समिति

- सदस्य -

डॉ. बी. एल. गोयल	डॉ. बीना सिंह	डॉ. अनिता सिंह
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	डॉ. प्रकृति जेम्स	डॉ. गौरी शर्मा
डॉ. प्रीति रानी मिश्रा	डॉ. रुचि त्रिपाठी	श्री रेशम लाल प्रधान
श्री संजीव लवानियाँ	डॉ. एस.रुपेन्द्र राव	डॉ. पुष्कर दुबे

पंजीयन एवं अन्य विवरण हेतु संपर्क-सूत्र

डॉ.जयपाल सिंह प्रजापति — Mob. : 92297-03055, e-mail : singh.jaipal82@gmail.com

डॉ. रुचि त्रिपाठी — Mob. : 95069-86425, e-mail : ruchitripathi04@gmail.com

डॉ. दीपक पाण्डेय — Mob. : 98279-55379, e-mail : deepakpandey985@gmail.com

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

शाश्वत भारत

विषय पर

तीन दिवसीय

ICSSR राष्ट्रीय-संगोष्ठी

(18-20 नवम्बर, 2017)

सहयोग :

संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन

सह-संयोजक
डॉ. राजकुमार सचदेव
कुलसचिव
Mob. 99816-33869
e-mail: registrar@pssou.ac.in

संयोजक
डॉ. बंश गोपाल सिंह
कुलपति
Mob. 98930-17457
e-mail: banshjee@gmail.com

www.pssou.ac.in

विश्वविद्यालय के संदर्भ में -

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका अपरिहार्य है। मनुष्य के जीवन में आने वाली बाधाऐं, उसकी शैक्षिक पिपासा को सीमित न कर सके एवं मनुष्य की शैक्षिक उन्नति सदैव बनी रहे इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु मुक्त विश्वविद्यालय में प्रचलित शिक्षा-पद्धति की महती भूमिका है। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्थित पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, भारत का 11वाँ राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है इसकी स्थापना छत्तीसगढ़ शासन अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा की गयी है। यह अधिनियम 20 जनवरी 2005 में लागू हुआ। विश्वविद्यालय का नाम महान स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, समाज सुधारक एवं छत्तीसगढ़ के गाँधी के रुप में विख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा जी की स्मृति को आलोकित कर रहा है।

विश्वविद्यालय 'स्वाध्याय: परम् तप:' के ध्येय वाक्य के साथ ' उच्च शिक्षा आपके द्वार' मूल वाक्य को चरितार्थ करते हुए छात्र हित एवं विकास की ओर निरन्तर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 06 क्षेत्रीय तथा एक उप क्षेत्रीय केन्द्र एवं 152 अध्ययन-केन्द्र संचालित हैं। विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर बिलासपुर लगभग 71 एकड़ में फैला हुआ है।

बिलासपुर शहर एक परिचय -

बिलासपुर छ.ग. राज्य के 27 जिलों में से एक है। बिलासपुर राज्य की राजधानी रायपुर से लगभग 111 कि.मी. उत्तर मे स्थित है। यह राज्य की न्यायधानी एवं प्रशासनिक दृष्टि से राज्य का दूसरा प्रमुख शहर है। बिलासपुर कृषि के क्षेत्र में चावल की विशेष किस्म (दुबराज, विष्णुभोग) आदि के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ के हाथकरघा उद्योग से बनी कोसे की साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। यहाँ की स्थानीय संस्कृति में सुआनृत्य, भोजली, राउत नाचा, पोला इत्यादि प्रमुख रूप से मनाए जाते हैं। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से ऊर्जा के क्षेत्र में बिलासपुर संभाग का देश मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके आसपास के क्षेत्रों में कई विद्युत गृहों में लगभग 10,000 से 15,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। पर्यटन के दृष्टिकोण से यहाँ शहर में अनेक स्थल हैं जिसमें विवेकानंद उद्यान, ऊर्जा पार्क, स्मृति वन, यातायात पार्क, बिलासा ताल आदि है। शहर के निकटतम दर्शनीय स्थल रतनपुर महामाया मंदिर, मल्हार, अमरकंटक, कानन पेण्डारी (मिनी जू), तालागाँव और चैतुरगढ़ प्रसिद्ध हैं।

शिक्षा की दृष्टि से बिलासपुर में राज्य के चार प्रमुख विश्वविद्यालय हैं इसके अतिरिक्त इंजी., चिकित्सा एवं कृषि महाविद्यालय स्थित हैं।

आवागमन सुविधा -

छ.ग. राज्य के सभी शहरों को जोड़ने के लिए यहाँ से बस सेवाऐं हैं व बिलासपुर रेल्वे स्टेशन छ.ग. के व्यस्ततम रेल मार्ग में से एक है। दक्षिण पूर्व मध्य रेल्वे जोन का मुख्यालय बिलासपुर में स्थित है। बिलासपुर का हवाई अड्डा चकरभाठा में स्थित है किन्तु दैनिक हवाई सेवा के लिए निकटतम हवाई अड्डा रायपुर है।

संगोष्ठी के विषय में -

भारतीय जीवन दृष्टि में चार वर्ण, चार आश्रम, पुरुषार्थ चतुष्ट्य की व्यवस्था, धर्म आधारित जीवन रचना और विकेन्द्रीकरण रहे। प्राचीन काल में इसी से यहां चौंसठ कलाएँ विकसित हुई, हजारों मंदिरों का शिल्प, पानी एवं कृषि की व्यवस्था, वस्त्र उद्योग, जिनका निर्यात 50 से अधिक देशों में होता था, शिक्षा व्यवस्था में हजारों विदेशी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते थे, का विकास हुआ था।

विभिन्नता में एकता की संकल्पना भारतीय समाज की मूलभूत विशिष्टता है। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में विभिन्न वर्णो, जातियों एवं सम्प्रदायों की उपस्थिति भिन्न-भिन्न रुपों में रही है। इन विभिन्नताओं ने एक समरस भारतीय समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है तथा विश्व में भारत की पहचान का महत्त्वपूर्ण स्तम्भ रही है। कालान्तर में इन विभिन्नताओं ने जहाँ एक तरफ एक संगठित एवं सुदृढ़ समाज की नींव डाली वहीं दूसरी ओर इनमें उभरी विकृतियों ने सामाजिक एकता को छिन्न-भिन्न कर दिया।

वैदिक काल की कर्म एवं व्यवसाय आधारित वर्ण व्यवस्था वर्तमान में जटिल जाति व्यवस्था के रूप में संपूर्ण भारतीय समाज को खण्ड-खण्ड में विभाजित कर दिया है और आपस में वैमनस्य एवं संदेह भर गया, इसका दुष्परिणाम गुलामी तथा मानसिक हीन भावना के रूप में सामने आया।

दुनिया के सभी धर्म, सम्प्रदाय भारत में पाये जाते हैं, इनमें से अधिकतर का उद्‌भव या केन्द्र भारत ही रहा है। इनके मूल स्वर में भारत के राष्ट्रवाद की आत्मा निहित है लेकिन कुछ एक धर्म, सम्प्रदाय शायद अभी भी अपने को भारत में एक अलग पहचान बनाये रखने के चलते धर्म, सम्प्रदाय आधारित सामाजिक भेदभाव एवं संघर्ष बना हुआ है। संकीर्ण राजनैतिक लाभ के लिये धर्म एवं जाति का राजनीतिकरण किया जाने लगा, जिससे भारतीय समाज विखण्डन की ओर उन्मुख हुआ है।

लैंगिक भेदभाव के कारण सम्पूर्ण समाज दो भागों में विभाजित हो गया। पितृसत्तात्मक समाज के विरुद्ध नारीवादी आन्दोलन चरम पर पहुंच गया। अभी भी महिलाओं की संघर्ष यात्रा जारी है एवं राजनैतिक दल अपने तुच्छ राजनैतिक हितों के कारण महिलाओं से जुड़े विषयों पर एक मत नहीं हैं।

वर्तमान भारत में सामाजिक भेदभाव कई और स्तरों पर उभरा है। जैसे-वृद्धों के प्रति सामाजिक भेदभाव। आज वे वृद्धाश्रम आदि जगहों पर शरण लेने के लिये विवश हैं। गरीब और अमीर आधारित सामाजिक भेदभाव की खाई और अधिक बढ गयी है, किसान-ग्रामीण समाज के व्यक्तियों को हेय दृष्टि से देखा जाता है। भारत में जहाँ पूर्वोत्तर के लोगों के साथ उत्तर भारत में जिस तरह की मारपीट एवं सौतेला व्यवहार होता है ऐसा तो किसी विदेशी के साथ भी नहीं होता है।

सामाजिक भेदभाव की समस्या केवल भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में पायी जाती है जैसे - अमेरिका में श्वेत-अश्वेत के मध्य, मुस्लिम देशों में सिया-सुन्नी आदि।

सामाजिक भेदभाव को दूर करने के लिए भारत में समय-समय पर विभिन्न विचारकों, समाज सुधारकों (संत कबीर, दयानंद सरस्वती, महात्मा गाँधी, डॉ. अंबेडकर आदि) का योगदान सराहनीय है। स्वतंत्रता पश्चात कमजोर, पिछडे वर्ग, अनसुचित जाति, अनसुचित जनजाति वर्ग के लोगों और सभी महिलाओं के मूल अधिकारों के संरक्षण एवं सामाजिक न्याय को पाने के लिए संविधान मे विधिक व्यवस्था की है लेकिन विभिन्न सामाजिक विषयों पर शासन, प्रशासन एवं न्यायपालिका की स्थिति स्पष्ट प्रतीत नहीं होती है जो कि समाज मे संघर्ष को जन्म देती है।

प्रश्न यही उठता है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के 70 वर्ष के पश्चात समाज में शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक स्तर में एक बडा परिवर्तन हो चुका है, इसके बावजूद विभिन्न क्षेत्रों-स्तरों पर समाजिक भेदभाव की खाई और गहरी होते हुए ''मॉब लिंचिंग'' के रुप में परिवर्तित हो रही है जो देश की एकता एवं अखण्डता के लिए गंभीर खतरा है यह चिंतनीय एवं विचारणीय है।

संबंधित बिन्दु -

1 सामाजिक भेदभाव का स्वरुप -
जाति / लिंग / वर्ग / संप्रदाय / धर्म / प्रजातीय / भाषीय / क्षेत्रीय / दिव्यांग

2 सामाजिक भेदभाव एवं समाज में विभिन्न प्रक्रियाएँ -
वैश्वीकरण / विवेकीकरण / सात्मीकरण / संस्कृतिकरण / इथ्नोसिन्ट्रिजम, इत्यादि।

3 सामाजिक भेदभाव पर विभिन्न उपागम।

4 भारत मे वैदिक कालीन वर्ण व्यवस्था और सामाजिक भेदभाव।

5 मॉब लिंचिंग:-स्वरुप, कारण एवं निवारण।

6 भारत मे लोकतंत्र की समीक्षा और सामाजिक भेदभाव।

7 पहचान का संकट और सामाजिक भेदभाव।

8 सामाजिक भेदभाव के कारक तत्व - आर्थिक / राजनैतिक / सामाजिक व्यवस्था, इत्यादि।

9 समाज मे प्रदत्त एवं अर्जित प्रस्थितियाँ एवं सामाजिक भेदभाव।

10 शिक्षा, रोजगार के अवसर एवं तीव्र- संधारणीय विकास और सामाजिक भेदभाव।

11 भारत की विविधता एवं विभिन्नता के मध्य 21 वीं सदी में नवोन्मेष से पूर्ण भारत में सामाजिक भेदभाव।

12 सामाजिक भेदभाव के प्रति पत्रकारिता एवं सोशल मीडिया की भूमिका।

13 सामाजिक भेदभाव पर संवैधानिक हस्तक्षेप एवं विधिक उपचार।

14 जाति उन्मूलन के उपाय।

15 सामाजिक भेदभाव को दूर करने में विभिन्न विचारकों एवं समाज सुधारकों का योगदान।

16 अन्य सम्बन्धित विषय।

राष्ट्रीय-संगोष्ठी

भारत में सामाजिक भेदभाव : स्वरूप, कारण एवं निवारण

(Social Discrimination in India: Nature, Causes and Prevention)

06-07 अक्टूबर 2018

पंजीयन - प्रपत्र

नाम : ....

पद : ....

संस्थागत पता : ....

....

....

ई-मेल आईडी : ....

मोबाईल नं : ....

शोध-पत्र का विषय: ....

बैंक ड्राफ्ट नं. : .... दिनांक ....

बैंक का नाम : ....

दिनांक हस्ताक्षर

नोट-

प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपना शोध-आलेख सारांश (Abstract) 300 शब्दों में दिनांक 30 सितम्बर 2018 एवं संपूर्ण शोध - पत्र भेजने की अंतिम तिथि 03 अक्टूबर 2018 तक seminarpssou@gmail.com पर भेजें। हिन्दी हेतु कृति देव- 010 (Font Size -14) और अँग्रेज़ी हेतु Times New Roman (Font Size-12) का उपयोग करें।

पंजीयन शुल्क -

1000 रु. प्राध्यापक गण एवं अन्य विद्वतजन।

600 रु. विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं हेतु शुल्क नगद जमा कराएँ या डी.डी. के माध्यम से (Seminar Organiser PSSOU, Bilaspur) के पक्ष में जो बिलासपुर में देय हो।

इच्छुक प्रतिभागी इस पंजीकरण प्रपत्र की छाया प्रति प्रयुक्त कर सकते हैं एवं विश्वविद्यालय website: www.pssou.ac.in से डाउनलोड कर सकते हैं। आवास की व्यवस्था के लिये रु 2400/- व्यक्तिगत एवं 1500/- साझा करने पर प्रति व्यक्ति देय होगा कृपया एक सप्ताह पूर्व सूचित करें।

सम्पर्क करें -

8839017319, 8476985418, 7974663241, 9506986425, 8839476193, 7587365320, 9993450848, 9229703055

आयोजन समिति

संरक्षक
प्रो. बंश गोपाल सिंह
मा. कुलपति

सहसंरक्षक
डॉ. राजकुमार सचदेव
कुलसचिव

संयोजक
डॉ. श्रीमती बीना सिंह
विभागाध्यक्ष : शिक्षा विभाग

संयुक्त संयोजक
श्री संजीव कुमार लवानियाँ
विभागाध्यक्ष : समाजशास्त्र-समाजकार्य विभाग

आयोजन सचिव
डॉ. अनिता सिंह
सहा. प्राध्यापक, शिक्षा विभाग

सदस्य

डॉ. बी.एल.गोयल	डॉ. प्रकृति जेम्स
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	डॉ. रुचि त्रिपाठी
डॉ. प्रीतिरानी मिश्रा	श्री रेशमलाल प्रधान
डॉ. एस.रुपेन्द्र राव	डॉ. पुष्कर दुबे
डॉ. गौरी शर्मा	डॉ. मोरध्वज त्रिपाठी
डॉ.तनुजा बिरथरे	डॉ. अनुपमा कुमारी
डॉ. सुषमा सोलंकी	डॉ. बालक राम चौकसे
श्री फूलेश्वर वर्मा	कु. शारदा पटेल
कु. नेहा अंचल	

संभावित सम्माननीय विशिष्ट वक्ता

प्रोफेसर गौरी दत्त शर्मा
(मा. कुलपति, बिलासपुर विश्वविद्यालय बिलासपुर, छ.ग.)

प्रोफेसर टी. वी. कट्टीमनी
(मा. कुलपति, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय वि.वि. अमरकंटक, म.प्र.)

श्री जगदीश उपासने
(मा. कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता वि.वि. भोपाल, म.प्र.)

श्री हिमांशु द्विवेदी
(संपादक, हरिभूमि रायपुर)

श्री राजकुमार गुप्ता
(उप-महाधिवक्ता, छ.ग. उच्च-न्यायलय बिलासपुर)

प्रोफेसर एस.के. जाधव
(विभागाध्यक्ष - बायोटेक, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर)

श्री दादा इदाते
(पूर्व चेयरमेन, एन.सी.डी.एन.टी. भारत सरकार, नई दिल्ली)

श्री रमेश पतंगे
(वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता, मुंबई, महाराष्ट्र)

राष्ट्रीय-संगोष्ठी

06-07 अक्टूबर 2018

भारत में सामाजिक भेदभाव : स्वरूप, कारण एवं निवारण

(Social Discrimination in India: Nature, Causes and Prevention)

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।

आइए, सब लोग भावनात्मक रुप से साथ-साथ चलें, साथ-साथ बोलें, साथ-साथ मन को समझें !
जिस प्रकार हमारे पूर्व देवगण समवेत स्वर में परमात्मा की उपासना करते थे !!

ऋग्वेद 10.191.4

आयोजक

शिक्षा विभाग एवं समाजशास्त्र विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

email - seminarpssou@gmail.com
pssou.ac.in

बिलासपुर के विश्वविद्यालय

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की स्थापना छत्तीसगढ़ शासन के अधिनियम क्र. 26 / 2004 द्वारा की गई है। इस विश्वविद्यालय का क्षेत्राधिकार संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य है। बेहतर शिक्षा के उद्देश्य हेतु छः क्षेत्रीय केंद्र एवं 179 अध्ययन केंद्र संचालित है।

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) की स्थापना 16 जून 1983 को हुई थी एवं 15 जन. 2009 को केंद्र सरकार द्वारा केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में दर्जा दिया गया है। बेहतर शिक्षा हेतु तकनीकी एवं उच्च स्तर की शिक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) की स्थापना 2 मार्च 2012 को हुई है। इस विश्वविद्यालय में 5 जिलों में 176 महाविद्यालयों में बेहतर शिक्षा हेतु विभिन्न पाठ्यक्रमों का संचालन होता है।

डॉ सी.व्ही. रमन् विश्वविद्यालय, कोटा,बिलासपुर (छ.ग.) की स्थापना 03 नवंबर 2006 में हुई है। विश्वविद्यालय में तकनीकी शिक्षा एवं विभिन्न प्रकार की पाठ्यक्रम के बेहतर शिक्षा उपलब्ध है।

संगोष्ठी के विषय में

वर्तमान में जल संकट भारत के लिए एक बहुत बड़ी समस्या है। इन दिनों जल-संरक्षण शोधकर्ताओं के लिए मुख्य विषय बना हुआ है। छत्तीसगढ़ राज्य भी इससे अछूता नहीं है। आधारभूत पंचतत्त्वों में से जल हमारे जीवन का आधार एवं संपूर्ण जीव-जगत् का आधार है। जल के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। जल ऐसा प्राकृतिक संसाधन है, जिसकी महत्ता इसी से परिलक्षित होती है कि बड़ी सभ्यताएँ एवं प्राचीन नगर नदियों के तट पर ही विकसित हुए है। यद्यपि पृथ्वी के 70 प्रतिशत क्षेत्र में जल है, उसमें से केवल 2.5 प्रतिशत ही पीने योग्य मीठे जल के स्त्रोत है। इसी मीठे जल स्त्रोतों पर पूरे विश्व पटल का जीवन निर्भर करता है, जो पूरे विश्व में सभी समुदायों के बीच विभाजित एवं फैला हुआ है। दुनिया के जल-निकायों में अधिकांशतः प्रदूषित है, भू-मण्डल में उपयोग करने योग्य ताजे जल का लगभग 97 प्रतिशत भू-जल के रूप में संग्रहित किया जाता है। आने वाले समय में पीने-योग्य जल की कमी सबसे महत्त्वपूर्ण संकट के रूप में उभर रही है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सभी विकसित एवं विकासशील देश तेजी से बढ़ती शहरीकरण की समस्या से जुझ रहे है, जिनके परिणामस्वरुप दो तरह की समस्याएँ जन्म ले रही है -

(1) जल संसाधनों का अत्यधिक दोहन (2) जल-संसाधनों का प्रदूषण

वहीं दूसरी ओर दिन-प्रतिदिन जल की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। शहरीकरण एवं औद्योगिकीकरण के अनियंत्रित तरीके से विकसित होने के कारण तथा ग्रामीणों के शहर की ओर पलायन करने से शहर की जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिससे जल-संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है एवं प्रतिव्यक्ति जल-संसाधनों की उपलब्धता में दिन-प्रतिदिन कमी आ रही है।

जलवायु परिवर्तन के कारण संपूर्ण देश बाढ़ और सूखे की समस्या से ग्रसित है। भू-जल के अत्यधिक दोहन के कारण नदियों के प्रवाह में कमी तथा जल-संसाधनों के स्तर में कमी हो रही है। नहरों से अत्यधिक सिंचाई के कारण जल-ग्रसनता एवं लवणता की समस्या पैदा हो चुकी है। जल की उपादेयता को ध्यान में रखकर यह अत्यंत आवश्यक है कि हम न सिर्फ जल का सरंक्षण करे बल्कि उसे प्रदूषित होने से बचाएँ।

दो दिवसीय राष्ट्रीय-संगोष्ठी से जल की उपयोगिता, संरक्षण और रि-साईक्लिंग के संबंध में पर्याप्त ज्ञान और जागरूकता का विश्वास है।

संगोष्ठी की विषयवस्तु

1. जल-संरक्षण (Water Conservation)
2. जल-सुरक्षा एवं सरकार की योजनाएँ (Water Security and Government Planning)
3. जल-चक्रीयकरण एवं पुनःउपयोग (Water re-cycling and re-use)
4. जल गुणवत्ता एवं शोधन (Water Quality and treatments)
5. आदर्श शहर एवं ग्रामों हेतु एकीकृत जल संग्रहण तकनीक (Integrated Water Harvesting technologies for Smart city and Model village)
6. वाटर सेड द्वारा भू-जल प्रबंधन (Watershed and ground water management)
7. जल एवं ग्लोबल वार्मिंग (Water and Globel warming)

शोध-आलेख सारांश एवं प्रादर्श हेतु आमंत्रण

इच्छुक प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपना शोध-आलेख सारांश (Abstract) अधिकतम 300 शब्दों में दिनाँक 18 मार्च, 2018 तक wcnationalseminar@gmail.com पर भेजें।

शोध-आलेख सारांश निम्नानुसार फॉन्ट में भेजें -

हिंदी हेतु	कृतिदेव 11	(Font Size-14)
अँग्रेज़ी हेतु	Times New Roman	(Font Size-12)

- शोध-आलेख सारांश उपरोक्त फॉन्ट के अलावा अन्य फॉन्ट में स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
- शोध-आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 18 मार्च, 2018
- स्थल पंजीयन कराने पर प्रतिभागी को केवल प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाएगा।
- विद्यार्थियों के द्वारा संगोष्ठी की विषयवस्तु से संबंधित प्रादर्श (Model) आमंत्रित किए जाते है। प्रादर्श की पंजीयन हेतु दिनांक 20 मार्च, 2018 तक विश्वविद्यालय मुख्यालय में संपर्क करें। तीन सर्वश्रेष्ठ प्रादर्श को पुरस्कृत किया जाएगा।

बिलासपुर आगमन

बिलासपुर आगमन : बिलासपुर ट्रेन मार्ग से देश के सभी शहरों से जुड़ा है। यह हावड़ा-मुम्बई मुख्य मार्ग पर स्थित है। हवाई मार्ग हेतु नजदीक एयरपोर्ट रायपुर 130 किलोमीटर दूर है।

टी.ए. / डी.ए. एवं आवास व्यवस्था : प्रतिभागी अपनी यात्रा व्यय की व्यवस्था अपनी संस्थानों से करेंगे तथापि राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके भोजन एवं यातायात की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जायेगी। आवास व्यवस्था हेतु प्रतिभागियों को पूर्व में सूचित करना होगा जिससे कि उनके लिए सशुल्क आवास व्यवस्था सुनिश्चित हो सके, अन्यथा आवास व्यवस्था उन्हें स्वयं करनी होगी।

पंजीयन

पंजीयन शुल्क :

क्र.	पंजीयन शुल्क का विवरण	18 मार्च तक	स्थल पंजीयन
1	प्राध्यापक गण / अन्य	600 / -	800 / -
2	विद्यार्थी / शोधार्थी	400 / -	600 / -

1. पंजीयन शुल्क का ड्राफ्ट : Organizer Water Conservation PSSOU Bilaspur के पक्ष में बिलासपुर में देय हो, बनवायें।
2. पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा आयोजक विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों पर 18 मार्च, 2018 तक उपलब्ध रहेगी।
3. स्थल पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय में आयोजन स्थल पर 29 मार्च, 2018 को उपलब्ध रहेगी।
4. ऑनलाइन एवं चालान द्वारा शुल्क जमा करने हेतु बैंक ऑफ बड़ौदा खाता क्र. 58100100000654 (IFSC Code: BARB0BIRKON MICR - 495012006) में जमा कर सकते है। zero

पंजीयन-प्रपत्र

नाम : डॉ. / प्रो. / श्री / श्रीमती ....

पदनाम : .... लिंग : ....

संस्था का नाम : ....

पता : ....

....

....

दूरभाष क्र : .... मोबाइल : ....

ई-मेल : ....

शोध-पत्र का शीर्षक : ....

क्या आपको आवास की आवश्यकता है ? हाँ / नहीं : ....

भुगतान की कुल राशि (रु.में) : ....

भुगतान का माध्यम (नगद / डिमांड ड्राफ्ट / चालान) ....

रसीद क्र. .... ड्राफ्ट क्र. .... चालान क्र. ....

बैंक का नाम : .... दिनांक : ....

हस्ताक्षर ....

भरा हुआ पंजीयन प्रपत्र सशुल्क पंजीयनकर्ता के पास जमा करायें। यदि आवश्यक हो तो पंजीयन फॉर्म की छायाप्रति का उपयोग पंजीयन हेतु किया जा सकता है। प्रतिभागीगण संगोष्ठी में पंजीयन के लिए पंजीयन प्रपत्र एवं चालान प्रारुप वेबसाइट www.pssou.ac.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

प्रस्तावित वक्तागण

श्री दत्तात्रय होसबोले, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता, पटना (बिहार)

श्री राजेन्द्र सिंह, प्रसिद्ध भारतीय पर्यावरण कार्यकर्ता, रेमन मैगसेसे पुरस्कार 2011 से सम्मानित

श्री दीपक विसफुते, सामाजिक कार्यकर्ता, रायपुर (छ.ग.)

प्रो. एल.पी. चौरसिया, भू-विज्ञान विभाग, हरि सिंह गौर वि.वि., सागर (म.प्र.)

डॉ. एस.के. पटनायक, विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विभाग, संबलपुर वि.वि., संबलपुर

श्री दीपक कुमार मैती, भू-वैज्ञानिक, मिदनापुर

डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव, सहा.प्राध्यापक, भू-विज्ञान विभाग, शा. व्ही.वाय.टी. महा. दुर्ग

श्री कुण्डलेश्वर पाणीग्राही, भू-जल संग्रहण विशेषज्ञ, एन.जी.ओ, रायपुर (छ.ग.)

डॉ. ए.एम. पोफरे, प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष-भू-विज्ञान विभाग, आर.टी.एम. नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर (महाराष्ट्र)

डॉ. डी.पी. क्यूटी, यू.जी.सी. विजिटिंग प्रोफेसर

श्रीमती फूलबासन यादव, पद्मश्री, मिनीमाता अलंकरण से विभूषित

श्री निनाद बोधनकर, SOS in Geology, Pt.R.S.U., Raipur (C.G.)

श्री गौतम बंधोपाध्याय

आयोजन समिति के सदस्य

डॉ. बी. एल. गोयल	डॉ. बीना सिंह	डॉ. अनिता सिंह
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	डॉ. प्रकृति जेम्स	डॉ. रुचि त्रिपाठी
डॉ. प्रीति रानी मिश्रा	श्री रेशमलाल प्रधान	श्री संजीव लवानियाँ
डॉ. एस.रुपेन्द्र राव	डॉ. पुष्कर दुबे	डॉ. गौरी शर्मा
प्रो. श्रिया साहू	डॉ. गुंजन पाटिल	डॉ. ए.के. श्रीवास्तव

पंजीयन एवं अन्य विवरण हेतु संपर्क-सूत्र

डॉ.अनिता सिंह सहा. प्राध्यापक	Mob. : 98271-18808 e-mail : 31anitasingh@gmail.com
श्री रेशमलाल प्रधान सहा. प्राध्यापक	Mob. : 70243-83191 e-mail : reshamlalpradhan6602@gmail.com
डॉ. एच.एस.होता सह-प्राध्यापक	Mob. : 94252-22658 e-mail : proffhota@gmail.com
डॉ. के.के. चंद्रा सह-प्राध्यापक	Mob. : 94790-67324 e-mail : kkckvk@gmail.com
डॉ. मनीष उपाध्याय प्राध्यापक	Mob. : 7999646657 e-mail : man_bsp@rediffmail.com

मुख्य संरक्षक

डॉ. बंश गोपाल सिंह, कुलपति
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. अंजिला गुप्ता, कुलपति
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. गौरी दत्त शर्मा, कुलपति
बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

प्रो. रवि प्रकाश दुबे, कुलपति
डॉ. सी.व्ही. रमन् विश्वविद्यालय,कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

संरक्षक

डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. बी.एन. तिवारी, कुलसचिव
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. इंदु अनंत, कुलसचिव
बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

श्री गौरव शुक्ला, कुलसचिव
डॉ. सी.व्ही. रमन् विश्वविद्यालय,कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

संयोजकगण

डॉ. अनिता सिंह, सहायक प्राध्यापक
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

श्री रेशमलाल प्रधान, सहायक प्राध्यापक
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. के.के. चन्द्रा, सह-प्राध्यापक
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. एच.एस. होता, सह-प्राध्यापक
बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. मनीष उपाध्याय, प्राध्यापक
डॉ. सी.व्ही. रमन् विश्वविद्यालय,कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

(29-30 मार्च, 2018)

विषय

जल संरक्षण : समय की माँग

आयोजक

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. सी.व्ही. रमन् विश्वविद्यालय,कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

आयोजन स्थल

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
कोनी-बिरकोना मार्ग, ग्राम - बिरकोना, जिला - बिलासपुर (छ.ग.)
पिन कोड - 495009

www.pssou.ac.in

About the University

Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh is located in Bilaspur and was established by the Act of the State Legislative Assembly (Act 26 of 2004). The University was formally inaugurated by the former Vice Prime Minister, Govt. of India, Shri Lal Krishna Advani on 29th March, 2005. It offers several programmes/courses in ODL mode through 7 Regional Centres and 144 Study Centres in the entire region of Chhattisgarh state. The university is appropriately named to honor Pandit Sundarlal Sharma (1881-1940). He was among the stalwarts of Indian freedom fighter who stood for social justice, equality and non-violence. He is epitomized as the 'Gandhi of Chhattisgarh' for his unique contribution to society.

About the Department

Department of Psychology, Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur was established in the year 2016 with an aim to preach quality education in the state. The Department is committed to provide value based education to the individual by best of the means. In the line of fulfillment of the vision of the University, the Department through Open and distance learning mode is devoted to broaden the domain of wisdom by providing knowledge to individual at their doorstep. The promising attitude of the faculties and staffs of the department helps in converging the expectation of the society at large. The department offers various courses like Post Graduate Diploma in Psychological Guidance and Counseling (PGDPG&C), Undergraduate and Doctoral level programme. Research undertaken at the department serves to fulfill the immediate requirement of the community. The Department also runs a counseling centre at the University which provides Psychological assessment services by resolving the behavioral problems of the students and public at large. The department organizes seminars and workshops on continuous basis for the upliftment of knowledge domain.

About Bilaspur

Bilaspur is the second largest city of importance in Chhattisgarh. It is known as the judicial as well as the cultural capital of the state (*Nyayadhani* and *Sanskardhani*), and is rich in etiquette & hospitality. The Bilaspur High Court is the largest High Court of Asia. This city is also the headquarters for South East Central Railway Zone and South Eastern Coalfields Limited. Ever since the creation of Chhattisgarh, Bilaspur has progressed by leaps and bounds. Bilaspur is the third cleanest railway station of India. This city has also developed as educational hub of Chhattisgarh. The place is a nice amalgamation of a fast developing city and at the same time of a region having natural beauty and spiritual importance. The city is well connected with roadways and railway and the nearest airport is in Raipur.

About Conference

Community Psychology is distinct from theoretical psychology. It is a way of thinking that can be applied to many life situations and communities. It is interdisciplinary in nature and therefore, it has borrowed subject matter and research methodology from various disciplines like sociology, social work, anthropology, ecological science, economics, geography etc. The prime focus of community psychology has been intervention and prevention for community welfare in order to improve the quality of life and community well-being. In community psychology, seven core values have been prime concern. These are: individual and family wellness, sense of community, respect for human diversity, social justice, citizen participation, collaboration and community strengths and empirical grounding. These issues are equally important for Indian setting.

Community psychology has applied action oriented research. But according to subject matter of research, community psychologists adopt some other approach such as participatory research, policy research, and advocacy, consultation with organizations, , participant observation, qualitative interviewing, focus groups, case studies, narratives, discourse etc. some quantitative methods viz. quantitative description, randomized field experimentation, non-equivalent comparison group design and interrupted time series designs.

Community counselling draws its definition and explanation primarily from community psychology. As a derivative of community psychology, community counselling theories reflect a concern "with transforming the way psychosocial problems and solutions are conceptualized, providing a contextual analysis that takes cognizance of local knowledge's and social issues". Community counselling practices are "about transforming psychological service delivery to include systemic interventions and preventative and health promoting strategies to facilitate equitable access to relevant mental health services for all, and to address social factors that impact on the well-being of individuals and communities".

In the area of health promotion, community counseling is concerned with the life style management of diabetic, cardiac and cancer, HIV patients and their care givers; to work for dispelling misconceptions towards mental illness in communities and work for elderly people.

Community Counseling practices are "about transforming psychological service delivery to include systematic interventions and preventive and health promoting strategies to facilitate equitable access to relevant mental health services for all and to address social factors that impact on the well-being of individuals and communities. Community counselor may be involved in prevention programs focusing on mental health and public health issues such as HIV and AIDS, poverty reduction, prisons, substance abuse, violence, street children, trauma, refugees, women well-being, disability, adolescents and gender dynamics.

Theme

Community Counselling for Health Promotion and Well-being

Sub Themes

- Life style management of diabetic, cardiac and cancer, HIV patients and their care givers;
- Community Mental Health
- Stress Management and well-being
- Community counseling for drug abuse and alcoholism among adolescents,
- Community counseling for mental health problems among adolescents.
- Gender sensitization
- Gender equity and gender justice.
- Geriatric Health
- Yoga and Meditation
- Positive Parenting
- Adolescents' Mental Health Problems
- Mental health problem in Organization
- Social Responsibility
- Self help and Mental Support Groups
- Issues related to Divyang childern
- Community Counselling for prevention of Drug Abuse among adolescence

Conference Schedule

March 03, 2019 : Registration, Inaugural Session, Panel Discussion

March 04, 2019 : Special Academic sessions

March 05, 2019 : Open Session/Paper presentation & Valedictory session.

Submission of Abstract/Full Paper

The abstract should not be more than 250 words in Times New Roman 12pts. Font for English and Kruti dev-11, 12Pts. for Hindi. Last date of submission of abstract is 20th February 2019 and Full paper may be submitted before 25th February, 2019. Abstract and Paper may be sent on email - cpaibilaspur@gmail.com

All the accepted abstracts will be considered for publication a[s] seminar proceeding souvenir with ISBN.

Full Paper submission

Title: Times New Roman, Size 18 Bold ; Krutidev 11 - Size 18 Bold

Authors with affiliation: Size 12 in the order Last Name & First Name

Text: It should comprise Abstract, Introduction, Method, Results, Discussion, Conclusion, References (According to APA format).

Registration Details

Registration to the conference can be done by filling the registration for[m]

Registration Fee

Category	On or Before 21st Feb. 2019	After 21st Feb, 2019
Faculty/Professionals	INR 1500	INR 2000
Research Scholars	INR 1000	INR 1500
Students	INR 800	INR 1000

Registration Fee can be paid by DD/Online Transfer as under:

Name of Account: Conference Psychology PSSOU Bilaspur

Account No.: 58100100000900

Bank Name: BANK OF BARODA (BIRKONA BRANCH)

IFSC code: BARB0BIRKON. (Fifth character is zero)

TA, DA and Accommodation

Participants will have to bear the travelling expenses of their own. However, free lodging will be provided here. Participants are required to inform the organizing committee in advance regarding the requirement of free stay arrangement. Accommodation facility will be provided to limited participants on first cum first serve basis.

Advisory Committee

Prof. R.S. Singh, Rewa
Dr. N.K. Saxena, Kanpur
Prof. Mukta Rani Rastogi, Lucknow
Prof. P.C. Mishra, Lucknow
Dr. P.K. Khatri, Lucknow
Prof. Sandeep Rana, Hisar
Prof. V. Ganesan, Coimbatore
Prof. N.S. Tung, Amritsar
Prof. Aarti Back, Jammu
Prof. A.V. Manavat, Jaipur
Prof. V.R. Sinde, Pune
Dr. N.V. Deshmukh, Nasik
Prof. N.R. Sharma, Rohtak
Prof. Priyamvada Shrivastava, Raipur
Prof. Meeta Jha, Raipur
Prof. Manju Agrawal, Amity University
Prof. Rajendra Singh, Bhopal
Dr. S.N. Dubey, Faizabad
Dr. A.N. Rai, Ghazipur

Organising Committee

Dr. B.L. Goyal	Dr. Beena Singh
Dr. Anita singh	Dr. Basant Sonber
Dr. Jay Singh	Dr. Tripti Biswas
Dr. Prakriti James	Dr. Jaipal Singh Prajapati
Dr. Preeti Rani Mishra	Dr. Ruchi Tripathi
Mr. Sanjeev Lavania	Mr. Reshamlal Pradhan
Dr. Mordhwaj Tripathi	

NOTICE

General Body meeting of Community Psycholog Association will be held on 5th March, 2019 at 9:00 a.m. a venue of the conference to form new executive committe and academic council. Only life members will have place in the executive committee - **Prof. Ramjee Lal** General Secretary (H.Q.) Jaunpur.

Chief Patron

Prof. Bansh Gopal Singh
Vice-Chancellor

Patron

Dr. Rajkumar Sachdeo
Registrar

Convener

Dr. S. Rupendra Rao
Assistant Professor & Head
Department of Psychology
rupendrrao@gmail.com
+91 8817956122

Co-Convener

Dr. Pushkar Dubey
Assistant Professor & Head
Department of Management
drdubeypkag@gmail.com
+91 7975663241

Organising Secretary

Dr. Deepak Pandey
ICSSR-Post Doctoral Fellow
Department of Psychology
deepakpandey985@gmail.com
+91 9827955379

andit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur
www.pssou.ac.in

National Conference of Community Psychology Association of India

On

Community Counselling for Health Promotion and Well-being

(March 03-05, 2019)

Sponsored by

Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi

Organised by

Department of Psychology
Pandit Sundarlal Sharma (Open) University
Chhattisgarh, Bilaspur

cpaibilaspur@gmail.com

- विश्वविद्यालय के संदर्भ में -

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका अपरिहार्य है। मनुष्य के जीवन में आने वाली बाधाऐं, उसकी शैक्षिक पिपासा को सीमित न कर सके एवं मनुष्य की शैक्षिक उन्नति सदैव बनी रहे इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु मुक्त विश्वविद्यालय में प्रचलित शिक्षा-पद्धति की महती भूमिका है। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्थित पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, भारत का 11वाँ राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है इसकी स्थापना छत्तीसगढ़ शासन अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा की गयी है। यह अधिनियम 20 जनवरी 2005 में लागू हुआ। विश्वविद्यालय का नाम महान स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, समाज सुधारक एवं छत्तीसगढ़ के गाँधी के रूप में विख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा जी की स्मृति को आलोकित कर रहा है।

विश्वविद्यालय 'स्वाध्याय: परम् तप:' के ध्येय वाक्य के साथ 'उच्च शिक्षा आपके द्वार' मूल वाक्य को चरितार्थ करते हुए छात्र हित एवं विकास की ओर निरन्तर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 06 क्षेत्रीय तथा एक उप क्षेत्रीय केन्द्र एवं 144 अध्ययन-केन्द्र संचालित हैं। विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर बिलासपुर लगभग 71 एकड़ में फैला हुआ है।

- संगोष्ठी के विषय में -

सृजनात्मकता की पहचान चार तत्वों से की जा सकती है प्रवाह, लचीलापन, मौलिकता, विस्तार। यह सृजनशील बालकों में निहित विशिष्ट गुण है, ऐसे बालक स्वतन्त्र निर्णय शक्ति वाले होते है, अपनी बात पर दृढ़ होते है तथा जटिल से जटिल समस्याओं के समाधान में रुचि लेते है। नवीन संबंधों को जोड़ना एवं उन्हे अभिव्यक्त करना सृजनात्मकता की विशेषता है।

सृजनात्मकता प्रत्येक व्यक्ति की क्रिया में पाई जाती है। समाज मे कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के कार्य एवं व्यवसाय मे सृजनात्मकता के दर्शन होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति में सृजन की संभावनाएँ होती है और निश्चित ही उसका विकास किया जाना चाहिए। वर्तमान मानव जीवन में अनेक परिवर्तन आ रहे है। प्रत्येक पग पर उसे चुनौतियों का सामना करना पड रहा है। नवीन परिस्थितियों का सामना करने हेतु सृजन की प्रतिभा को विकसित किया जाना चाहिए।

बालको में सृजनात्मकता दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिये उत्साहजनक वातावरण का निर्माण आवश्यक है सृजनात्मकता के विकास में शिक्षा एवं शिक्षक दोनों की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा का यह कार्य है कि बालक में निहित सृजनात्मकता को पहचान कर उसके विकास हेतु समुचित व्यवस्था या वातावरण उत्पन्न करें। सृजनात्मकता के विकास हेतु समुचित अवसर प्रदान किए जाएँ, क्योंकि विद्यालय या विद्यालय के बाहर प्राप्त अनुभवों में उत्कृष्ट कोटि की सृजनात्मकता निहित रहती है, उदाहरणस्वरूप किसी बालक की अभिव्यक्ति का माध्यम खेलकूद हो सकता है। जिम्नास्टिक का अभ्यास नृत्यकला की आधारशिला बन सकता है। यहाँ पर शिक्षक की भूमिका ऐसी होनी चाहिए कि वह विद्यार्थी को उसकी सृजनात्मकता की प्रवृति की अभिव्यकित हेतु उपयुक्त माध्यम ढूँढने में समुचित मार्गदर्शन प्रदान करें।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली सैद्धांतिक अधिक है और व्यवहारिक कम। ऐसे में विषय वस्तु को याद करने पर अधिक बल दिया जाता है। बालकों में किस प्रकार की सृजनात्मकता गुण है, उसको पहचानना और उस पर आधारित पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधि का प्रयोग करना आदि कार्यो का आभाव अभी विद्यालयों में देखने को मिलता है। हालाँकि सृजनात्मकता एक मौलिक गुण है और परिपक्वता के बढ़ने के साथ इसमें भी निखार आता है। कई बार यह भी देखने को मिलता है कि कम पढ़ा लिखा अर्थात् जिसनें औपचारिक शिक्षा न प्राप्त की हो या कम प्राप्त की हो। ऐसे लोग अपने जीवन के अनुभव और अनौपचारिक शिक्षा के माध्यम से ही अपनी सृजनशीलता को विकसित कर लेते हैं। लेकिन विद्यालय एक ऐसा स्थान है जहाँ पहुँचने वाले प्रत्येक बालक को यह अवसर मिलना ही चाहिए जहाँ वह अपनी सृजनशीलता को पहचाने और विकसित करें।

- संगोष्ठी की विषयवस्तु -

- वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष तथा सृजनात्मक दृष्टि से सुझाव।
- शिक्षा पद्धति, परिणाम एवं तनाव प्रबंध के संदर्भ में सृजनात्मकता।
- विद्यालय एवं घर में सृजनात्मकता की स्वीकार्यता।
- रचनात्मक कार्यो के लिए संसाधनों / प्रेरणा की उपलब्धता।
- विद्यालय वातावरण एवं सृजनात्मकता।
- नंबर आधारित पद्धति के कारण सृजनात्मकता के सीमित अवसर।
- शिक्षालय में नवीन ज्ञान के अनुप्रयोग के अवसर।
- नवीन ज्ञान के अनुप्रयोग हेतु पाठ्यक्रम में स्थान की आवश्यकता तथा अवसर की उपलब्धता।
- शिक्षक छात्र अंत:क्रिया एवं सृजनात्मकता के विकास की सीमा।
- सृजनात्मकता बनाम व्यावहारिकता।
- शिक्षा पद्धति, सृजनात्मकता एवं बाजारवाद।
- अन्य संबंधित विषय।

- विशेष -

टी.ए. / डी.ए. एवं आवास व्यवस्था : प्रतिभागी अपनी यात्रा व्यय की व्यवस्था अपनी संस्थानों से करेंगे तथापि राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके भोजन एवं यातायात की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जायेगी। आवास व्यवस्था हेतु प्रतिभागियों को पूर्व में सूचित करना होगा जिससे कि उनके लिए सशुल्क आवास व्यवस्था सुनिश्चित हो सके, अन्यथा आवास व्यवस्था उन्हें स्वयं करनी होगी।

- शोध-आलेख सारांश हेतु निर्देश -

इच्छुक प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपना शोध-आलेख सारांश (Abstract) अधिकतम 300 शब्दों में दिनाँक 10 फरवरी, 2019 तक creativitynationalseminar@gmail.com पर भेजें।

शोध-आलेख सारांश एवं संपूर्ण शोध हेतु फॉन्ट एवं साइज निम्नानुसार भेजें -

हिंदी हेतु	कृतिदेव 11	(Font Size-14)
अँग्रेजी हेतु	Times New Roman	(Font Size-12)

- शोध-आलेख सारांश उपरोक्त फॉन्ट के अलावा अन्य फॉन्ट में स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
- आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक 10 फरवरी, 2019
- संपूर्ण शोध भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक 13 फरवरी, 2019

- पंजीयन-प्रक्रिया -

1. संगोष्ठी में सामान्य छात्र, शिक्षक, सामाजिक संस्थाएँ प्रतिभागी हो सकते है।
2. इच्छुक प्रतिभागी पंजीयन प्रपत्र, पंजीयन शुल्क के साथ दिनांक 10 फरवरी, 2019 तक जमा करना अनिवार्य होगा।
3. पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय मुख्यालय में 'महामाया परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन' के कक्ष क्र. 08 में दिनांक 10 फरवरी, 2019 तक उपलब्ध रहेगी।
4. स्थल पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय में आयोजन स्थल के पंजीयन काऊंटर में दिनांक 16 फरवरी, 2019 को उपलब्ध रहेगी।
5. स्थल पंजीयन कराने वाले प्रतिभागीयों को पंजीयन-किट प्रदान नही किया जावेगा। उन्हें केवल प्रमाण-पत्र प्रदान किया जावेगा।
6. ऑनलाइन एवं चालान द्वारा शुल्क जमा करने हेतु बैंक ऑफ बड़ौदा खाता में जमा कर सकते है -

   MICR - 495012006 IFSC Code: BARB0BIRKON (Zero)

   खाता क्र. : 58100100001089

   खाता का नाम : "वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता"

पंजीयन शुल्क :

क्र.	पंजीयन शुल्क का विवरण	10 फरवरी तक	स्थल पंजीयन
1	प्राध्यापक गण / अन्य	600/-	800/-
2	विद्यार्थी / शोधार्थी	500/-	600/-
3	सामाजिक कार्यकर्ता	600/-	800/-

- पंजीयन-पपत्र -

नाम : ....

पदनाम : .... लिंग : ....

संस्थागत पता : ....

....

....

मोबा. : ....

ई-मेल : ....

शोध-पत्र का शीर्षक : ....

क्या आपको आवास की आवश्यकता है? हॉं / नहीं : ....

भुगतान की कुल राशि (रु.में) : ....

भुगतान का माध्यम (नगद / डिमांड ड्राफ्ट / चालान) ....

रसीद क्र. .... ड्राफ्ट क्र. .... चालान क्र. ....

बैंक का नाम : .... दिनांक : ....

हस्ताक्षर ....

भरा हुआ पंजीयन प्रपत्र सशुल्क पंजीयनकर्ता के पास जमा करायें। यदि आवश्यक हो तो पंजीयन फॉर्म की छायाप्रति का उपयोग पंजीयन हेतु किया जा सकता है। प्रतिभागीगण संगोष्ठी में पंजीयन के लिए पंजीयन प्रपत्र एवं चालान प्रारुप वेबसाइट www.pssou.ac.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

- प्रस्तावित वक्तागण -

प्रोफेसर जे.एस. राजपूत
पूर्व निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. बंश गोपाल सिंह
कुलपति, पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

प्रोफेसर गिरीश्वर मिश्र
कुलपति, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रोफेसर ह्रिकेश सिंह
कुलपति, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार)

प्रोफेसर यू.एस. चौधरी
पूर्व कुलपति एवं प्राध्यापक, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.)

डॉ. अरविन्द पाण्डेय
प्राध्यापक, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ.प्र.)

डॉ. अभिजीत कुमार पाल
प्राध्यापक, पश्चिम बंगाल विश्वविद्यालय, कोलकाता

डॉ. रमेश बाबू
प्राध्यापक, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल (म.प्र.)

डॉ. एस. के. यादव
सेवानिवृत्त प्राध्यापक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. एस. पी. शुक्ला
प्राध्यापक, गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात

डॉ. राजश्री वैष्णव
प्राध्यापक, आर.टी.एम. विश्वविद्यालय, नागपुर (महाराष्ट्र)

- बिलासपुर शहर एक परिचय -

बिलासपुर छ.ग. राज्य के 27 जिलों में से एक है। बिलासपुर राज्य की राजधानी रायपुर से लगभग 111 कि.मी. उत्तर मे स्थित है। यह राज्य की न्यायधानी एवं प्रशासनिक दृष्टि से राज्य का दूसरा प्रमुख शहर है। बिलासपुर कृषि के क्षेत्र में चावल की विशेष किस्म (दुबराज, विष्णुभोग) आदि के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ के हाथकरघा उद्योग से बनी कोसे की साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। यहाँ की स्थानीय संस्कृति में सुआनृत्य, भोजली, राउत नाचा, पोला इत्यादि प्रमुख रूप से मनाए जाते हैं। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से ऊर्जा के क्षेत्र में बिलासपुर संभाग का देश मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके आसपास के क्षेत्रों में कई विद्युत गृहों में लगभग 10,000 से 15,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। पर्यटन के दृष्टिकोण से यहाँ शहर में अनेक स्थल हैं जिसमें विवेकानंद उद्यान, ऊर्जा पार्क, स्मृति वन, यातायात पार्क, बिलासा ताल आदि है। शहर के निकटतम दर्शनीय स्थल रतनपुर महामाया मंदिर, मल्हार, अमरकंटक, कानन पेण्डारी (मिनी ज़ू), तालागाँव और चैतुरगढ़ प्रसिद्ध हैं।

शिक्षा की दृष्टि से बिलासपुर में राज्य के चार प्रमुख विश्वविद्यालय हैं इसके अतिरिक्त इंजी., चिकित्सा एवं कृषि महाविद्यालय स्थित हैं।

- मुख्य संरक्षक -

प्रो. बंश गोपाल सिंह
मा. कुलपति
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

डॉ. राजकुमार सचदेव
कुलसचिव
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- संयोजक -

डॉ. श्रीमती बीना सिंह
डॉ. अनिता सिंह
डॉ. प्रकृति जेम्स

- आयोजन समिति के सदस्य -

डॉ. बी.एल.गोयल
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
डॉ. रुचि त्रिपाठी
डॉ. प्रीतिरानी मिश्रा
श्री संजीव लवानियॉं
श्री रेशमलाल प्रधान
डॉ. एस.रुपेन्द्र राव
डॉ. पुष्कर दुबे

- पंजीयन एवं अन्य विवरण हेतु संपर्क-सूत्र -

डॉ. बीना सिंह	Mob. : 88390-17319 e-mail : drbeenasingh2013@gmail.com
डॉ. अनिता सिंह	Mob. : 98271-18808 e-mail : 31anitasingh@gmail.com
डॉ. प्रकृति जेम्स	Mob. : 9993450848 e-mail : jamesprakriti@gmail.com

- आवागमन की सुविधा -

छ.ग. राज्य के सभी शहरों को जोड़ने के लिए यहाँ से बस सेवाऐं हैं व बिलासपुर रेल्वे स्टेशन छ.ग. के व्यस्ततम रेल मार्ग में से एक है। दक्षिण पूर्व मध्य रेल्वे जोन का मुख्यालय बिलासपुर में स्थित है। बिलासपुर का हवाई अड्डा चकरभाठा में स्थित है किन्तु दैनिक हवाई सेवा के लिए निकटतम हवाई अड्डा रायपुर है।

- बिलासपुर आगमन -

बिलासपुर आगमन : बिलासपुर ट्रेन मार्ग से देश के सभी शहरों से जुड़ा है। यह हावड़ा-मुम्बई मुख्य मार्ग पर स्थित है। हवाई मार्ग हेतु नजदीक एयरपोर्ट रायपुर 130 किलोमीटर दूर है।

राष्ट्रीय-संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

16-17 फरवरी, 2019

विषय

वर्तमान शिक्षा पद्धति एवं सृजनात्मकता

आयोजक

शिक्षा विभाग

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

pssou.ac.in

संगोष्ठी के विषय में

हमारा संविधान दिव्यांगजनों को स्वतंत्रता, समानता और न्याय के संबंध में स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करता है, किंतु वास्तविक स्थिति में देखा जाए तो सामाजिक, सांस्कृतिक मनोवैज्ञानिक कारणों के कारण दिव्यांगजनों का आज भी समाज में समानता का नहीं, व्यवहार का नहीं बल्कि उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है, दिव्यांगजनों के प्रति सामान्य वर्ग उपेक्षित व्यवहार, सामाजिक अस्वीकार्यता, रुढ़िवादी धारणाओं के कारण दिव्यांगजनों की क्षमता व कौशल का सही उपयोग व मूल्यांकन नहीं हो पाता और वे अपने को अन्य वर्ग से अलग मान कर हीनभावना का शिकार हो जाते हैं। दिव्यांगता को समझने व सामान्य व्यक्तियों के साथ परिवेश में समावेश करने हेतु हमें प्रतिदिन दिव्यांगता से संबंधित नवीन अवधारणाओं को समझने व क्रियाशील करने की जरूरत है ताकि पुरानी विचारधाराएँ नाकारात्मक मनोभाव व अनुभव प्रकट न हो सके।

दिव्यांगजनों के कल्याण और सशक्तीकरण के उद्देश्य से 12 मई, 2012 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग को एक अलग विभाग बनाया जिसका उद्देश्य है - एक समस्त समावेशी समाज का निर्माण करना जिसमें दिव्यांगजनों की उन्नति और विकास के लिए समान अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं ताकि वे सृजनात्मक, सुरक्षित और प्रतिष्ठित जीवन जी सकने में समर्थ हो सके।

निःशक्त व्यक्ति अधिकार (PWD) अधिनियम (समान अवसर अधिकारों का संरक्षण और पूर्ण भागीदारी) 1995 के प्रावधानों के अनुरूप दोहरे उद्देश्यों सहित, उसके सही कार्यान्वियन सुनिश्चित करने के लिए केंद्र सरकार ने दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 को अधिनियमित किया जो 19 / 04 / 2017 से प्रभाव में आया है। यह अधिनियम समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा रोजगार और पूर्नवास के माध्यम से दिव्यांगजन के पूर्ण और प्रभावी समावेश को सुनिश्चित करने के उपाय उपलब्ध कराता है।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य केंद्र बिंदु दिव्यांगों को सामाजिक स्वीकार्यता दिलाने के पक्ष में उठाए जाने वाले महत्त्वपूर्ण कदम, दिव्यांगों के अधिकार एवं अधिकारों की प्राप्ति में आने वाली चुनौतियाँ। उनके संघर्ष तथा उपलब्धियाँ। उनके पूर्नवास में शिक्षा तथा सरकारी योजनाओं की भूमिका। तकनीक का उनके जीवन में योगदान तथा अपराध जगत् में उनका इस्तेमाल संबंधी महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर विशेषजनों से नवीन ज्ञान प्राप्त करने तथा उनके क्रियान्वयन से समाज की भूमिका करने का प्रयास होगा।

संगोष्ठी की विषयवस्तु

- दिव्यांगता के प्रकार
- दिव्यांग विमर्श
- समावेशी शिक्षा
- विशेष शिक्षा
- दिव्यांगता एवं अपराध
- दिव्यांगता एवं प्रजातंत्र
- दिव्यांगों का पूर्नवास
- नेत्रदान : श्रेष्ठदान

9 दिव्यांगों की सामाजिक स्वीकार्यता
10 दिव्यांगता में तकनीकी योगदान
11 दिव्यांगों में सेवा संस्थानों की भूमिका
12 दिव्यांगता चिकित्सा एवं उपचार
13 दिव्यांगता और मनोविज्ञान
14 दिव्यांगता एवं आत्म-विश्वास
15 विकलांगकता अधिनियम दिसं. 2016
16 दिव्यांगों हेतु सरकारी योजनाएँ एवं उनका क्रियान्वयन

विशेष

टी.ए. / डी.ए. एवं आवास व्यवस्था : प्रतिभागी अपनी यात्रा व्यय की व्यवस्था अपनी संस्थानों से करेंगे तथापि राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके भोजन एवं यातायात की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जायेगी। आवास व्यवस्था हेतु प्रतिभागियों को पूर्व में सूचित करना होगा जिससे कि उनके लिए सशुल्क आवास व्यवस्था सुनिश्चित हो सके, अन्यथा आवास व्यवस्था उन्हें स्वयं करनी होगी।

संगोष्ठी के विभिन्न गतिविधियों हेतु आमंत्रण

(1) प्रादर्श : प्रतिभागियों के द्वारा संगोष्ठी की विषयवस्तु से संबंधित प्रादर्श (Model) आमंत्रित किए जाते हैं। प्रादर्श के पंजीयन हेतु दिनांक 05 जनवरी, 2019 तक विश्वविद्यालय मुख्यालय में 'परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन' के कक्ष क्र. 07 में संपर्क करें। क्रमशः तीन प्रादर्श को पुरस्कृत किया जावेगा।

(2) विक्रय स्टॉल : दिव्यांग बन्धुओं द्वारा निर्मित वस्तुओं के विक्रय हेतु स्टॉल आमंत्रित किए जाते हैं। विक्रय स्टॉल के पंजीयन हेतु दिनांक 10 जनवरी, 2019 तक विश्वविद्यालय मुख्यालय में 'परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन' के कक्ष क्र. 07 में संपर्क करें।

(3) सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं ललित कला प्रदर्शन : दिव्यांग प्रतिभागियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं ललित कला प्रदर्शन हेतु पंजीयन आमंत्रित किए जाते हैं। इच्छुक प्रतिभागी पंजीयन हेतु दिनांक 07 जनवरी, 2019 तक विश्वविद्यालय मुख्यालय में 'परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन' के कक्ष क्र. : 08 में संपर्क करें। क्रमशः तीन प्रस्तुतियों को पुरस्कृत किया जावेगा।

शोध-आलेख सारांश हेतु निर्देश -

इच्छुक प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपना शोध-आलेख सारांश (Abstract) अधिकतम 300 शब्दों में दिनाँक 05 जनवरी, 2019 तक pwdnationalseminar@gmail.com पर भेजें।

शोध-आलेख सारांश निम्नानुसार फॉन्ट में भेजें -

हिंदी हेतु	कृतिदेव 11	(Font Size-14)
अँग्रेज़ी हेतु	Times New Roman	(Font Size-12)

- शोध-आलेख सारांश उपरोक्त फॉन्ट के अलावा अन्य फॉन्ट में स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
- आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक 05 जनवरी, 2019
- पोस्टर प्रस्तुतिकरण हेतु प्रतिभागी 05 जनवरी, 2019 तक अपना पंजीयन करावें।
- विद्यार्थियों के द्वारा संगोष्ठी की विषयवस्तु से संबंधित प्रादर्श (Model) आमंत्रित किए जाते है। प्रादर्श की पंजीयन हेतु दिनांक 10 जनवरी, 2019 तक विश्वविद्यालय मुख्यालय में संपर्क करें। तीन सर्वश्रेष्ठ प्रादर्श को पुरस्कृत किया जाएगा।

पंजीयन-प्रक्रिया

1. संगोष्ठी में दिव्यांग, सामान्य छात्र, शिक्षक, सामाजिक संस्थाएँ प्रतिभागी हो सकते है।
2. इच्छुक प्रतिभागी पंजीयन प्रपत्र, पंजीयन शुल्क के साथ दिनांक 05 जनवरी, 2019 तक जमा करना अनिवार्य होगा।
3. पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय मुख्यालय में 'महामाया परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन' के कक्ष क्र. 08 में दिनांक 05 जनवरी, 2019 तक उपलब्ध रहेगी।
4. स्थल पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय में आयोजन स्थल के पंजीयन काउंटर में दिनांक 19 जनवरी, 2019 को उपलब्ध रहेगी।
5. स्थल पंजीयन कराने वाले प्रतिभागीयों को पंजीयन-किट प्रदान नहीं किया जावेगा। उन्हें केवल प्रमाण-पत्र प्रदान किया जावेगा।
6. ऑनलाइन एवं चालान द्वारा शुल्क जमा करने हेतु बैंक ऑफ बड़ौदा खाता क्र.: 58100100001059 (IFSC Code: BARB0BIRKON MICR-495012006) में जमा कर सकते है। zero

पंजीयन शुल्क :

क्र.	पंजीयन शुल्क का विवरण	05 जनवरी तक	स्थल पंजीयन
1	दिव्यांगों हेतु	निःशुल्क	निःशुल्क
2	प्राध्यापक गण / अन्य	600 / -	800 / -
3	विद्यार्थी / शोधार्थी	400 / -	600 / -

पंजीयन-प्रपत्र

नाम : ....

पदनाम : .... लिंग : ....

संस्था का नाम : ....

दिव्यांगता है, तो दिव्यांगता का प्रकार / स्वरूप : ....

पता : ....

.... मोबा. : ....

ई-मेल : ....

शोध-पत्र का शीर्षक : ....

क्या आप निम्न गतिविधियों में भाग लेना चाहते है?(केवल दिव्यांग हेतु) - प्रादर्श, विक्रय स्टॉल, सांस्कृतिक एवं ललित कला प्रदर्शन, प्रतियोगिता यदि हाँ, तो विवरण दें : ....

....

क्या आपको आवास की आवश्यकता है? हाँ / नहीं : ....

भुगतान की कुल राशि (रु.में) : ....

भुगतान का माध्यम (नगद / डिमांड ड्राफ्ट / चालान)..............

रसीद क्र. .... ड्राफ्ट क्र. .... चालान क्र. ....

बैंक का नाम : .... दिनांक : ....

हस्ताक्षर ....

भरा हुआ पंजीयन प्रपत्र सशुल्क पंजीयनकर्ता के पास जमा करायें। यदि आवश्यक हो तो पंजीयन फॉर्म की छायाप्रति का उपयोग पंजीयन हेतु किया जा सकता है। प्रतिभागीगण संगोष्ठी में पंजीयन के लिए पंजीयन प्रपत्र एवं चालान प्रारूप वेबसाइट www.pssou.ac.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

प्रस्तावित वक्तागण

डॉ. कमलेश कुमार पाण्डेय, मुख्य आयुक्त (दिव्यांगजन, भारत सरकार)

श्री गोपाल व्यास जी, संरक्षक, सक्षम, छ.ग. राज्य

जस्टिस श्री रमेश गर्ग, इंदौर, अध्यक्ष, अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद्

डॉ. माहेश्वरी, प्राध्यापक, अमलनेर, जलगाँव (महाराष्ट्र)

श्री आर. प्रसन्ना, (भा.प्र.से.) विशेष सचिव, समाज कल्याण विभाग छत्तीसगढ़ शासन

डॉ. जितेन्द्र जैन, उप महाधिवक्ता, इलाहाबाद उच्च न्यायालय उत्तरप्रदेश

डॉ. सुरेन्द्र शुक्ला, प्रांतीय अध्यक्ष, सक्षम, छ.ग. राज्य

श्री आशीष सिंह ठाकुर, SSPOS भारतीय डाक सेवा, रायपुर (छ.ग.)

डॉ. सुकुमार, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, सक्षम, नागपुर (महाराष्ट्र)

डॉ. संतोष, सह संयोजक CAMBA हैदराबाद (तेलंगाना)

डॉ. पवन स्थापक, नेत्ररोग विशेषज्ञ, जबलपुर (म.प्र.)

डॉ. प्रभात कुमार श्रीवास्तव, पैथोलॉजिस्ट, बिलासपुर (छ.ग.)

श्री विवेक तन्खा, पूर्व महाधिवक्ता, मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, जबलपुर (म.प्र.)

डॉ. मदन मोहन अग्रवाल, राष्ट्रीय महामंत्री, अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् बिलासपुर (छ.ग.)

श्री विरेन्द्र पाण्डेय, पूर्व अध्यक्ष, राज्य वित्त आयोग (म.प्र.)

श्री राजेद्र कुमार अग्रवाल, पूर्व अध्यक्ष फार्मेसी काउन्सिल, छ.ग. शासन, रायपुर

डॉ. डी.पी. अग्रवाल, वरिष्ठ चिकित्सक एवं राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष, अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् बिलासपुर (छ.ग.)

एक नजर - विश्वविद्यालय एवं आयोजक

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की स्थापना छत्तीसगढ़ शासन के अधिनियम क्र. 26 / 2004 द्वारा की गई है। इस विश्वविद्यालय का क्षेत्राधिकार संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य है। राज्य में इस विश्वविद्यालय के 07 क्षेत्रीय-कैंद्र - बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, जगदलपुर, अंबिकापुर, जशपुर तथा कांकेर है। विश्वविद्यालय के संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य में 153 अध्ययन-कैंद्र संचालित हैं। विश्वविद्यालय इन कैंद्रों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा-प्रणाली के आधार पर राज्य के दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों तक गुणवत्तायुक्त उच्च-शिक्षा प्रदान कर रहा है।

अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद् बिलासपुर : दिव्यांगता के समस्त आयामों तथा दिव्यांगों के प्रति सामाजिक चेतना जागरुक करने की दिशा में परिषद् विगत कई वर्षो से प्रयत्नशील तथा संघर्षरत् है। परिषद् द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी विकलांग एवं प्रजातंत्र पर चर्चा एवं अभिमांग, राजनैतिक दलों से विकलांग प्रकोष्ठ बनाने का आग्रह, निःशक्तजन हितार्थ किए जा सकने वाले 121 कार्यक्रमों का प्रकाशन निःशक्त चेतना ग्रंथ 1 से 6 तक का प्रकाशन, विकलांग विमर्श का वैश्विक परिदृश्य आदि अनगिनत साहित्य का प्रकाशन कराया गया है। परिषद् के द्वारा समय-समय पर विकलांग सामूहिक युवक-युवती परिचय सम्मेलन, विकलांग शल्य-शिविर, कृत्रिम पैर एवं कैलीपर्स वितरण शिविर, चेतना कार्यशाला, आदि का आयोजन सतत् रुप से किया जाता है।

सक्षम : समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल निःशक्तजनों के संपूर्ण विकास हेतु समर्पित राष्ट्रीय सामाजिक संगठन है।

मुख्य संरक्षक

डॉ. बंश गोपाल सिंह, कुलपति
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. डी.पी. अग्रवाल, संरक्षक
अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद्, बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. राजकुमार सचदेव, कुलसचिव
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

श्री अनूप कुमार पाण्डेय, प्रांतीय महामंत्री
सक्षम, छत्तीसगढ़

संयोजक

डॉ. बीना सिंह
डॉ. अनिता सिंह
डॉ. प्रकृति जेम्स

आयोजन समिति के सदस्य

डॉ. बी.एल.गोयल
डॉ. गौरी शर्मा
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति
डॉ. रुचि त्रिपाठी
डॉ. प्रीति रानी मिश्रा
श्री रेशमलाल प्रधान
डॉ. एस.रुपेन्द्र राव
डॉ. पुष्कर दुबे
संजीव लवानियाँ
डॉ. मोरध्वज त्रिपाठी

पंजीयन एवं अन्य विवरण हेतु संपर्क-सूत्र

डॉ. बीना सिंह	Mob. : 88390-17319 e-mail : drbeenasingh2013@gmail.com
डॉ. अनिता सिंह	Mob. : 98271-18808 e-mail : 31anitasingh@gmail.com
डॉ. प्रकृति जेम्स	Mob. : 9993450848 e-mail : jamesprakriti@gmail.com

बिलासपुर आगमन

बिलासपुर आगमन : बिलासपुर ट्रेन मार्ग से देश के सभी शहरों से जुड़ा है। यह हावड़ा-मुम्बई मुख्य मार्ग पर स्थित है। हवाई मार्ग हेतु नजदीक एयरपोर्ट रायपुर 130 किलोमीटर दूर है।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

19-20 जनवरी, 2019

विषय

दिव्यांगता : चुनौती एवं सामाजिक स्वीकार्यता

- आयोजक -

शिक्षा विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद्
बिलासपुर (छ.ग.)

सक्षम
समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल

- आयोजन स्थल -

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर
कोनी-बिरकोना मार्ग, ग्राम - बिरकोना, जिला - बिलासपुर (छ.ग.)
पिन कोड - 495009

www.pssou.ac.in

- विश्वविद्यालय के संदर्भ में -

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका अपरिहार्य है। मनुष्य के जीवन में आने वाली बाधाऐं, उसकी शैक्षिक पिपासा को सीमित न कर सके एवं मनुष्य की शैक्षिक उन्नति सदैव बनी रहे इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु मुक्त विश्वविद्यालय में प्रचलित शिक्षा-पद्धति की महती भूमिका है। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में स्थित पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, भारत का 11वाँ राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है इसकी स्थापना छत्तीसगढ़ शासन अधिनियम क्रमांक 26 सन् 2004 द्वारा की गयी है। यह अधिनियम 20 जनवरी 2005 में लागू हुआ। विश्वविद्यालय का नाम महान स्वतंत्रता सेनानी, साहित्यकार, समाज सुधारक एवं छत्तीसगढ़ के गाँधी के रुप में विख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा जी की स्मृति को आलोकित कर रहा है।

विश्वविद्यालय 'स्वाध्यायः परम् तपः' के ध्येय वाक्य के साथ 'उच्च शिक्षा आपके द्वार' मूल वाक्य को चरितार्थ करते हुए छात्र हित एवं विकास की ओर निरन्तर प्रयत्नशील है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 07 क्षेत्रीय तथा एक उप क्षेत्रीय केन्द्र एवं 120 अध्ययन-केन्द्र संचालित हैं। विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर बिलासपुर लगभग 69 एकड़ में फैला हुआ है।

- संगोष्ठी के विषय में -

अखबार की सुर्खियों में प्रतिदिन नाबालिक लड़कियों एवं महिलाओं से हुई छेड़खानी व रेप की संख्या में निरंतर होती वृद्धि, महिलाओं के प्रति पुरुष वर्ग के नजरिया एवं महिलाओं की सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह लगता है। इक्कीसवीं सदी में भी नारी सशक्तिकरण, आधी आबादी को बराबर का हक जैसे शब्दों की वास्तवीकता है या ये केवल मंच पर होने वाले भाषण तक सीमित हैं। इसकी समीक्षा आवश्यक प्रतीत होती है।

सदैव से दोयम दर्जा प्राप्त करने वाली स्त्री कभी परंपरा, कभी पारिवारिक दबाव, कभी संस्कृति को बनाए रखने के नाम पर बेड़ियों में जकड़ी गई, बाल-विवाह, सती-प्रथा, दहेज-प्रथा, पर्दा-प्रथा इसके उदाहरण हैं। वर्तमान समय वैश्वीकरण का है यहाँ भी स्त्री को एक भोग्या के रुप में प्रचार एवं मनोरंजन के नाम पर प्रर्दशित किया जा रहा है। आज भी यदि एक लड़की पढ़ने के नाम पर घर से बाहर जाती है, तो माता-पिता उसके घर पर वापस सही सलामत लौटने तक का बेचैन अवस्था में रहते है। आखिर ऐसा क्यों?

उच्च पदों पर पदस्थ महिलाओं को भी सहकर्मी पुरुष वर्ग स्वयं को उनसे श्रेष्ठ समझते हैं, अधिनस्थ कर्मचारी भी उन्हें अधिकारी के रुप में सहज रुप से स्वीकार नहीं कर पाते।

धीरे-धीरे अपने कर्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति सचेत होती स्त्री पारिवारिक और सामाजिक चुनौतियों को स्वीकारते हुए उसका जवाब देते हुए सशक्तिकरण के तरफ कदम बढ़ा रहीं हैं। शायद मंजिल अभी दूर है, रास्ता लम्बा है, किंतु दृढ़ता और विश्वास के साथ निरंतर आगे बढ़ते कदमों को एक दिन मंजिल अवश्य मिलेगी।

शासन द्वारा उठाये कदम ने भारत के महिलाओं के सशक्तिकरण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदाहरण स्वरुप समान वेतन का अधिकार, दहेज विरोधी कानून, कार्यस्थल मे उत्पीड़न के खिलाफ कानून, कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ अधिकार, पैतृक सम्पत्ति पर समान अधिकार इत्यादि। इन प्राप्त अधिकारों के साथ भारतीय महिलाएँ अपने को स्वंतत्र एवं सक्षम महसूस करते हुए विकास की ओर अग्रसर हैं। चिकित्सा, यांत्रिकी, शिक्षा, राजनीतिक, वकालत, बैंकिग, मिडिया, मनोरंजन, मजदूरी इत्यादि सभी कार्यो से जुड़ कर महिलाएँ सशक्त हो रही हैं और सभी कार्य को कुशलतापूर्वक करके स्वयं को सिद्ध करने में प्रयासरत् हैं।

सरकार द्वारा प्राप्त सुविधा एवं संरक्षण प्रथा लगातार इस विषय पर विभिन्न कार्यक्रम एवं शोध कार्य इत्यादि होने के बावजुद महिला उत्पीड़न रुक नहीं रहा है बल्कि प्रति वर्ष इसकी दर बढ़ रही है इसके बढ़ने का कारण तथा इसके रोकने का क्या उपाय हो सकता है इस संदर्भ में प्रायः में चर्चा बौद्धिक मंच पर होना तथा इसका समाधान खोजना अति आवश्यक है इसी संदर्भ में यह सेमीनार किया जा रहा है जिसमें विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित महिलाएँ वक्ता के रुप में आमंत्रित हैं तथा शोध पत्रों के माध्यम से भी सबके विचार आमंत्रित किए गए हैं जिससे हम सभी किसी निष्कर्ष पर पहुंच सकें।

- संगोष्ठी का उप-विषय-

- महिला सशक्तिकरण में शिक्षा-जगत् की चुनौतियाँ।
- महिला सशक्तिकरण में संविधान एवं कानून की भूमिका।
- सशक्त या सफल महिलाओं की चुनौतियाँ।
- महिला सशक्तिकरण के अवरोध के रुप में परिवार एवं लिंगवाद।
- महिला सशक्तिकरण एवं भारतीय संस्कृति में महिलाओं की स्थिति में विरोधाभास
- महिला सशक्तिकरण, वैश्वीकरण उपभोक्तावाद एवं चुनौतियाँ।
- प्रशासन एवं राजनीति में महिलाओं की भूमिका।
- महिलाओं के विषय में रुढ़ियुक्तियाँ और इसका प्रभाव।
- कामकाजी महिलाओं की कार्यस्थल पर स्वीकार्यता।
- महिला उत्पीड़न, महिला उत्पीड़न में महिलाओं की भूमिका एवं मानवाधिकार।
- लैंगिक असमानता।
- महिलाओं के साथ हो रहे अपराध।

- विशेष -

टी.ए. / डी.ए. एवं आवास व्यवस्था : प्रतिभागी अपनी यात्रा व्यय की व्यवस्था अपनी संस्थानों से करेंगे तथापि राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके भोजन की व्यवस्था विश्वविद्यालय द्वारा की जायेगी। आवास व्यवस्था हेतु प्रतिभागियों को पूर्व में सूचित करना होगा जिससे कि उनके लिए शीघ्र सशुल्क आवास व्यवस्था सुनिश्चित हो सके, अन्यथा आवास व्यवस्था उन्हें स्वयं करनी होगी।

- शोध-आलेख सारांश हेतु निर्देश -

इच्छुक प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपना आलेख सारांश (Abstract) अधिकतम 300 शब्दों में दिनाँक 23 जनवरी, 2020 तक nationalseminarwe2020@gmail.com पर भेजें।

शोध-आलेख सारांश एवं संपूर्ण शोध हेतु फॉन्ट साइज निम्नानुसार भेजें -

हिंदी हेतु	कृतिदेव 11	(Font Size-14)
अँग्रेज़ी हेतु	Times New Roman	(Font Size-12)

- शोध-आलेख सारांश उपरोक्त फॉन्ट के अलावा अन्य फॉन्ट में स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
- आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक - 23 जनवरी, 2020
- संपूर्ण शोध भेजने की अंतिम तिथि : दिनाँक - 26 जनवरी, 2020

- पंजीयन-प्रक्रिया -

1. संगोष्ठी में सामान्य छात्र, शिक्षक, सामाजिक संस्थाएँ प्रतिभागी हो सकते हैं।
2. इच्छुक प्रतिभागी पंजीयन प्रपत्र, पंजीयन शुल्क के साथ दिनांक - 23 जनवरी, 2020 तक जमा करना अनिवार्य होगा।
3. पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय मुख्यालय के 'सिहावा अकादमिक भवन' में दिनांक - 27 जनवरी, 2020 तक उपलब्ध रहेगी।
4. स्थल पंजीयन शुल्क नगद जमा करने की सुविधा विश्वविद्यालय में आयोजन स्थल के पंजीयन काऊंटर में दिनांक - 31 जनवरी, 2020 को उपलब्ध रहेगी।
5. स्थल पंजीयन कराने वाले प्रतिभागीयों को पंजीयन-किट प्रदान नहीं किया जावेगा। उन्हें केवल प्रमाण-पत्र प्रदान किया जावेगा।
6. ऑनलाइन एवं चालान द्वारा शुल्क जमा करने हेतु बैंक ऑफ बड़ौदा : खाता का नाम - विभागाध्यक्ष शिक्षा, खाता क्र. 58100100001476 (IFSC - BARB0BIRKON में जमा कर सकते हैं।

पंजीयन शुल्क :

क्र.	पंजीयन शुल्क का विवरण	30 जनवरी तक	स्थल पंजीयन
1	प्राध्यापक गण / अन्य	600/-	800/-
2	विद्यार्थी / शोधार्थी	500/-	600/-

- पंजीयन-पपत्र -

नाम : ....

पदनाम : .... लिंग : ....

संस्थागत पता : ....

....

....

मोबा. : ....

ई-मेल : ....

शोध-पत्र का शीर्षक : ....

क्या आपको आवास की आवश्यकता है? हाँ / नहीं : ....

भुगतान की कुल राशि (रु.में) : ....

भुगतान का माध्यम (नगद / डिमांड ड्राफ्ट / चालान) ....

रसीद क्र. .... ड्राफ्ट क्र. .... चालान क्र. ....

बैंक का नाम : .... दिनांक : ....

हस्ताक्षर ....

भरा हुआ पंजीयन प्रपत्र सशुल्क पंजीयनकर्ता के पास जमा करायें। यदि आवश्यक हो तो पंजीयन फॉर्म की छायाप्रति का उपयोग पंजीयन हेतु किया जा सकता है। प्रतिभागीगण संगोष्ठी में पंजीयन के लिए पंजीयन प्रपत्र एवं चालान प्रारूप वेबसाइट www.pssou.ac.in से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

- प्रस्तावित वक्तागण -

श्रीमती इंदिरा मिश्रा

डॉ. जयलक्ष्मी ठाकुर

डॉ. दर्शनीता बोरा अहलुवालिया

डॉ. किरणमयी नायक

डॉ. राजश्री वैष्णव

डॉ. आभा रुपेन्द्र पाल

डॉ. अनुपमा सक्सेना

श्रीमती विजया पाठक

डॉ. रीता वेणु गोपाल

डॉ. रश्मि शर्मा

- बिलासपुर शहर एक परिचय -

बिलासपुर छ.ग. राज्य के 27 जिलों में से एक है। बिलासपुर राज्य की राजधानी रायपुर से लगभग 111 कि.मी. उत्तर में स्थित है। यह राज्य की न्यायधानी एवं प्रशासनिक दृष्टि से राज्य का दूसरा प्रमुख शहर है। बिलासपुर कृषि के क्षेत्र में चावल की विशेष किस्म (दुबराज, विष्णुभोग) आदि के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ के हाथकरघा उद्योग से बनी कोसे की साड़ियाँ प्रसिद्ध हैं। यहाँ की स्थानीय संस्कृति में सुआनृत्य, भोजली, राउत नाचा, पोला इत्यादि प्रमुख रुप से मनाए जाते हैं। अर्थव्यवस्था की दृष्टि से ऊर्जा के क्षेत्र में बिलासपुर संभाग का देश मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके आसपास के क्षेत्रों में कई विद्युत गृहों में लगभग 10,000 से 15,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन होता है। पर्यटन के दृष्टिकोण से यहाँ शहर में अनेक स्थल हैं जिसमें विवेकानंद उद्यान, ऊर्जा पार्क, स्मृति वन, यातायात पार्क, बिलासा-ताल इत्यादि है। शहर के निकटतम दर्शनीय स्थल रतनपुर महामाया मंदिर, मल्हार, अमरकंटक, कानन पेण्डारी (मिनी जू), तालागाँव और चैतुरगढ़ प्रसिद्ध हैं।

शिक्षा की दृष्टि से बिलासपुर में राज्य के चार प्रमुख विश्वविद्यालय हैं इसके अतिरिक्त इंजी., चिकित्सा एवं कृषि महाविद्यालय स्थित हैं।

- मुख्य संरक्षक -

प्रो. बंश गोपाल सिंह
माननीय कुलपति
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- संरक्षक -

डॉ. इंदु अनंत
कुलसचिव
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- संयोजक -

डॉ. बीना सिंह
drbeenasingh2013@gmail.com
Mob. +91 8839017319

- सह संयोजक -

डॉ. अनिता सिंह
31anitasingh@gmail.com
Mob. +91 9827118808

- आयोजन सचिव -

डॉ. प्रीतिरानी मिश्रा
preemishra07@gmail.com
Mob. +91 7017128494

- आयोजन समिति के सदस्य -

डॉ. बी.एल. गोयल

डॉ. प्रकृति जेम्स

डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति

श्री संजीव लवानियाँ

श्री रेशमलाल प्रधान

डॉ. एस.रूपेन्द्र राव

डॉ. पुष्कर दुबे

डॉ. मोरध्वज त्रिपाठी

डॉ. निलिमा तिवारी

डॉ. तनुजा बिरथरे

- बिलासपुर आगमन -

बिलासपुर आगमन : बिलासपुर ट्रेन मार्ग से देश के सभी शहरों से जुड़ा है। यह हावड़ा-मुम्बई मुख्य मार्ग पर स्थित है। हवाई मार्ग हेतु नजदीक एयरपोर्ट रायपुर 130 किलोमीटर दूर है।

दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

31 जनवरी से 01 फरवरी, 2020

विषय

महिलाओं की वर्तमान दशा
तथा
महिला सशक्तिकरण के समक्ष चुनौतियाँ

प्रति,

....

....

....

आयोजक

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

www.pssou.ac.in
nationalseminarwe2020@gmail.com

पंजीयन-प्रपत्र

प्राध्यापकगण/शोधार्थी पंजीकरण के लिए पंजीकरण प्रपत्र वेबसाईट **www.pssou.ac.in** से डॉउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण हेतु पंजीकरण प्रपत्र की छायाप्रति का उपयोग किया जा सकता है। भरा हुआ पंजीकरण प्रपत्र पंजीयनकर्ता के पास अनिवार्यत: जमा करें।

पंजीयन नि:शुल्क है।

- पंजीकृत प्रतिभागियों की तीन दिवस (संगोष्ठी अवधि) उपस्थिति अनिवार्य है।
- प्रत्येक पंजीकृत प्रतिभागी को निदेशालय द्वारा प्रदत्त एक बैग, पैड, पेन, कार्यक्रम अनुसूची तथा तीन दिवस दोपहर का भोजन नि:शुल्क उपलब्ध कराया जायेगा।
- पंजीकृत प्रतिभागियों को यात्रा-व्यय देय नहीं होगा और न ही आवास उपलब्ध कराया जाएगा।
- प्रमाण-पत्र पंजीकृत प्रतिभागियों को ही प्रदान किया जाएगा।

विषय विशेषज्ञ

प्रो. ए. आर. अरविंदाक्षन, वरिष्ठ आलोचक-कवि, केरल
डॉ. श्रीराम परिहार, ललित निबंधकार, खंडवा
प्रो. टी. एन. शुक्ला, साहित्यकार एवं समीक्षक, जबलपुर
डॉ. राजेन्द्र मिश्र, वरिष्ठ साहित्यकार एवं समीक्षक, रायपुर
डॉ. सुशील त्रिवेदी, संपादक, छत्तीसगढ़-मित्र, रायपुर
श्री रमेश नैयर, वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार, रायपुर
डॉ. कनक तिवारी, वरिष्ठ अधिवक्ता एवं साहित्यकार, दुर्ग
प्रो. चित्तरंजन कर, प्राध्यापक, लेखक, रायपुर
डॉ. अरुण होता, साहित्यकार, कोलकोता
प्रो. आनंद त्रिपाठी, प्राध्यापक-लेखक, सागर
श्री नंदकिशोर तिवारी, साहित्यकार-लेखक, बिलासपुर
प्रो. के.के. सिंह, प्राध्यापक, वर्धा
श्री गिरीश पंकज, वरिष्ठ व्यंग्यकार, रायपुर
प्रो. शैल शर्मा, प्राध्यापक, रायपुर
प्रो. तीर्थेश्वर सिंह, प्राध्यापक-लेखक, अमरकंटक
डॉ. सुधीर शर्मा, प्राध्यापक-लेखक, भिलाई
डॉ. नीरज खरे, प्राध्यापक-लेखक, बनारस
डॉ. रवीन्द्र कात्यायन, प्राध्यापक-लेखक, मुंबई

संरक्षक

प्रो. बंश गोपाल सिंह
कुलपति, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सह-संरक्षक

डॉ. राजकुमार सचदेव
कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय
छत्तीसगढ़, बिलासपुर

परामर्शदाता

प्रो. के.एल. वर्मा
पूर्व निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

आयोजन समिति

डॉ. बी. एल. गोयल	- 7898484846
डॉ. बीना सिंह	- 9425564509
डॉ. अनिता सिंह	- 9827118808
डॉ. प्रकृति जेम्स	- 9993450848
डॉ. गौरी शर्मा	- 9425566014
डॉ. प्रीती रानी मिश्रा	- 9425517530
श्री रेशम लाल प्रधान	- 810385456
श्री संजीव कुमार लवानियाँ	- 8476985418
डॉ. एस. रूपेन्द्र राव	- 9993924404
डॉ. पुष्कर दुबे	- 7024289666

प्रति,

तीन दिवसीय

राष्ट्रीय-संगोष्ठी

24-26 अगस्त, 2017

हिंदी के बहुप्रयुक्त रूप : वैज्ञानिकता एवं संभावनाएँ

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग, नई दिल्ली

तथा

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर के संयुक्त तत्वावधान में

आयोजक

हिंदी-विभाग
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

संयोजक	सह-संयोजक
डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	डॉ. रुचि त्रिपाठी
विभागाध्यक्ष, हिंदी	विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान
मोबा. 9229703055	मोबा. 9415880815

विश्वविद्यालय परिचय:

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर की स्थापना छत्तीसगढ़ शासन के अधिनियम क्रं. 26/2004 द्वारा की गई है। विश्वविद्यालय का नाम स्वतंत्रता सेनानी, अहिंसावादी, समता एवं सामाजिक न्याय के युगपुरुष एवं 'छत्तीसगढ़ के गाँधी' के नाम से सुविख्यात पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (1881-1940 ई.) के नाम पर है। यह एक शासकीय राज्य मुक्त विश्वविद्यालय है जिसका कार्यक्षेत्र संपूर्ण छत्तीसगढ़ राज्य है। विश्वविद्यालय का मुख्यालय बिलासपुर, छः क्षेत्रीय-केंद्र: रायपुर, बिलासपुर, दुर्ग, अम्बिकापुर, जशपुर, जगदलपुर तथा एक उप-क्षेत्रीय कार्यालय कांकेर है। विश्वविद्यालय के संपूर्ण छत्तीसगढ़ में 180 अध्ययन-केंद्र संचालित हैं जिनमें वनांचल बस्तर (अबूझमाड़) सरगुजा, जशपुर जैसे दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों के विद्यार्थी भी अध्ययनरत हैं। विश्वविद्यालय इन केंद्रों के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा-प्रणाली के आधार पर गुणवत्तायुक्त उच्च-शिक्षा प्रदान कर रहा है।

बिलासपुर:

यह राज्य का दूसरा सबसे बड़ा शहर है, यहाँ छत्तीसगढ़ राज्य का उच्च न्यायालय है। इसे न्याय और संस्कारधानी के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे का मुख्यालय बिलासपुर में है। शिष्टाचार और आतिथ्य के लिए तत्पर इस समृद्ध शहर की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और प्राकृतिक सुंदरता की अनुपम छटा देखने लायक है।

पर्यटन स्थल:

- रतनपुर (माँ महामाया मंदिर) 26 कि.मी.।
- तालागाँव (प्राचीन देवरानी-जेठानी मंदिर) 40 कि.मी.,
- मल्हार (पातालेश्वर, डिडनेश्वरी मंदिर) 40 कि.मी.
- चैतुरगढ़ (छत्तीसगढ़ का कश्मीर) 65 कि.मी.,
- गिरौदपुर (संत गुरुघासीदास की जन्मस्थली), जैत खांभ (कुतुब मीनार से ऊँचा) 62 कि.मी.।

पहुँच मार्ग :

- सड़क/रेल: बिलासपुर, रेल/सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। मुम्बई-नागपुर-हावड़ा रेल-मार्ग पर स्थित है, समीप ही रेलवे स्टेशन उस्लापुर भी है।
- हवाई मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा (स्वामी विवेकानंद हवाई अड्डा) रायपुर है जिसकी बिलासपुर से दूरी लगभग 125 कि.मी. है।

संगोष्ठी शीर्षक के विषय में:

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथ्वी यथौकसम्

(अर्थववेद, पृथ्वी सूक्त 12.1.45)

अर्थात् इस पृथ्वी पर अनेक भाषा-भाषी और विभिन्न धार्मिक मान्यताओं वाले लोग रहते हैं, फिर भी-

भूमिः पुत्रोः अहं पृथिव्याः

(अर्थववेद, पृथ्वी सूक्त 12.1.12)

अर्थात् यह धरती हमारी माता है और हम उसके पुत्र हैं। जाति, धर्म, वर्ग, पंथ, प्रांत, संस्कृति अलग होते हुए भी हम सब एक हैं। क्योंकि हम विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम' मानते हैं, और हम सब इस वैदिक ऋचा अनुरूप मानवीय आधार पर प्राणी मात्र की सेवा के लिए दृढ़ संकल्पित है।

यह सत्य है कि भाषा विचाराभिव्यक्ति के लिए जितनी महत्त्वपूर्ण है उतनी ही राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए भी आवश्यक है। हिंदी की उच्चारण और लेखन एकरूपता आज प्रत्येक भारतवासी के चिंतन-मनन और अखंड भारत की अवधारणा के लिए प्राण ऊर्जा है। हिंदी केवल कार्यालयीन भाषा नहीं है बल्कि हमारी संस्कृति की वाहक है। इसलिए जहाँ-जहाँ माँ भारतीय पुत्र/पुत्रियाँ निवासरत् हैं, वहाँ-वहाँ हिंदी भाषा और संस्कृति प्रसारित हो रही है। हिंदी भाषा भारत सहित नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, मलेशिया, बांग्लादेश, मॉरिशस, सूरीनाम, फ़िजी, गयाना, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, दक्षिण अफ्रीका, यमन, युगांडा, सिंगापुर, न्यूजीलैंड, जर्मनी, आस्ट्रेलिया तथा विश्व के अन्य देशों में हिंदी बोलने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

हिंदी भाषा और लिपि तकनीकी दृष्टि से सुसंपन्न है। हिंदी तकनीकी विषयों, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, अंतरिक्षविज्ञान, खगोलविज्ञान इत्यादि में भी प्रयुक्त हो रही है। हिंदी तकनीकी उन्नति के समनान्तर लोगों के दैनिक जीवन के सुचारु संचालन के लिए हिंदी सरल, सहज और ग्राह्य भाषा बन गई है, हिंदी के तकनीकी विकास की अपार संभावनाएँ हैं। यही कारण है कि वर्तमान में पूरे विश्व में हिंदी भाषा बोलने-समझने-लिखने वालों की जीवन रेखा बन रही है और हम कह रहे हैं कि अब हिंदी विश्वभाषा बन सकती है। इसी तरह संपूर्ण भारत में आठवीं अनुसूची में शामिल 22 भाषाओं (असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, मैथिली, संथाली, डोगरी, और बोडो) सहित अन्य क्षेत्रीय बोलियाँ प्रचलित हैं जो जनसामान्य के संप्रेषण का प्रमुख माध्यम हैं। इन भाषा और बोलियों में प्रचुर मात्रा में लोक-साहित्य है। ये भाषा और बोलियाँ भारतीय जनमानस में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। कई शब्द तो ऐसे हैं जो तकनीकी एवं ध्वन्यात्मक रूप से प्रतिरूप से लगते हैं जैसे- अँग्रेज़ी का मॉउस कई राजभाषाओं और बोलियों में मूस (भोजपुरी), मूस व मूसवा (छत्तीसगढ़) बोला जाता है।

संगोष्ठी का उद्देश्य :

हिंदी के बहुप्रयुक्त रूप : वैज्ञानिकता एवं संभावनाएँ विषयक प्रस्तावित तीन दिवसीय राष्ट्रीय-संगोष्ठी में हिंदी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्य की वैज्ञानिकता और तकनीकी सहित उनके साहित्यिक रूपों पर सारगर्भित व्याख्यान/शोध-पत्र/आलेख-वाचन तथा चर्चा-परिचर्चा भाषाओं और बोलियों के उन्नयन को नई दिशा मिले, और हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता एवं तकनीकी संभावनाओं की सुनिश्चित कार्य-योजना बनाने में सहायता मिल सकेगी।

प्रस्तावित विषय-वस्तु:

- ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी।
- अखंड भारत और हिंदी।
- धर्म, पंथ, प्रांत, और राष्ट्रीय एकीकरण में हिंदी।
- समाज, संस्कृति, तथा राष्ट्रीय पहचान में हिंदी का योग।
- लोक संस्कृति, साहित्य में हिंदी का रूप।
- भारतीय शिक्षा का स्वरूप और हिंदी।
- हिंदी का वैश्विक परिदृश्य।
- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अभियांत्रिकी, चिकित्सा, विधि, तथा प्रबंधन, पत्रकारिता में हिंदी।
- सूचना प्रौद्योगिकी का विकास और हिंदी।
- अंतरराष्ट्रीय राजनैतिक, कूटनैतिक, व्यावसायिक संबंधों में हिंदी।
- 21 वीं शताब्दी में हिंदी का स्वरूप, और उसके तकनीकी पक्ष।

शोध-पत्र/आलेख/पंजीकरण

इच्छुक प्रतिभागी अपना शोध-पत्र/आलेख सारांश हिंदी में (**Kruti Dev 010 Font Size-14**) 300 शब्दों में **seminarchdhindi2017@gmail.com** पर 18 अगस्त, 2017 तथा पूर्ण शोध-पत्र/आलेख 20 अगस्त, 2017 सायं 5.30 बजे तक भेजें। 20 अगस्त, 2017 पश्चात् प्राप्त शोध-पत्र/आलेख पर विचार नहीं किया जाएगा। प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे शोध-पत्र/आलेख प्रेषण की सूचना डॉ. रुचि त्रिपाठी, दूरभाष 9415880815 पर अनिवार्यत: देंवे। शोध-पत्र/ आलेख मौलिक होना चाहिए। पंजीकृत (चयनित) प्रतिभागियों की अंतिम सूची 22 अगस्त, 2017 को जारी की जाएगी।

Invited Speakers:

Prof. Girishwar Misra
Vice Chancellor
Mahatma Gandhi International Hindi University
Wardha

Prof. R.N.Rai
Former Head
Department of English
Banaras Hindu University

Prof. Avadhesh Kumar Singh
(Former Vice Chancellor, Dr. Babasheb Ambedkar Open University)
School of Translation Studies and Training
IGNOU, New Delhi

Prof. Shambhu Nath Singh
(Former Vice Chancellor, Patna University)
School of Jouralism and New Media Studies
IGNOU, New Delhi

Prof. Anita Singh
(Nehru Fulbright Fellow)
Department of English
&
Co-Coordinator
Centre for Women Studies and Development
Banaras Hindu University

Prof. Manish Shrivastava
Dean, School of Arts
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya
(A Central University)
Bilaspur (C.G.)

Prof. Krishna Singh
Dean, Faculty of Humanities & Philology
Indira Gandhi National Tribal University
Amarkantak (M.P.)

Organizing Committee

Chief Patron
Prof. Bansh Gopal Singh
Vice Chancellor

Patron
Dr. Raj Kumar Sachdeo
Registrar

Convener
Dr. Ashutosh Singh
Head
Department of English
9407691925

Co-Convener
Ms. Ruchi Tripathi
Head
Department of Political Science
9415880815

Organizing Secretary
Dr. Jaipal Singh Prajapati
Head
Department of Hindi
9229703055

Organizing Members

Dr. Beena Singh
9425564509

Mr. Reshamlal Pradhan
8103854356

Dr. Anita Singh
9827118808

Mr. Sanjeev Kumar Lavania
8476985418

Dr. Prakriti James
9993450848

Dr. S.Rupendra Rao
8817956122

Dr. Gouri Sharma
9425566016

Dr. Pushkar Dubey
9938973044

Dr. Preeti Mishra
7587365320

Two-day National Seminar on
Nation, Culture and Identity:
Theory and Text in the 21st Century

11 - 12 February 2017
(Sponsored by ICSSR, New Delhi)

Organized by
Department of English

Pt. Sundarlal Sharma (Open) University
Chhattisgarh, Bilaspur 495009
Koni-Birkona Road
website:www. pssou.ac.in

Convener & Head
Dr. Ashutosh Singh
9407691925
Email : ashutoshbhu2002@gmail.com

About the University

Pandit Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh is located in Bilaspur and was established by an Act of the State Legislative Assembly (Act 26 of 2004). The University was formally inaugurated by the former Vice Prime Minister, Govt. of India, Shri Lal Krishna Advani on 20th January, 2005 in the 55th year of the republic of India. It offers several programmes/courses in ODL mode through 6 Regional Centres and 106 Study Centres in the entire region of Chhattisgarh. The university is appropriately named to honor Pandit Sundarlal Sharma (1881-1940). He was among the stalwarts of Indian freedom fighter who stood for social justice, equality and non-violence. He is epitomized as the *'Ghandhi of Chhattisgarh'* for his unique contribution to society.

About Bilaspur

Bilaspur is the second largest city of importance in Chhattisgarh. It is known as the judicial as well as the cultural capital of the state (*Nyayadhani* and *Sanskardhani*), and is rich in etiquette & hospitality. The Bilaspur High Court is the largest High Court of Asia. This city is also the headquarters for South East Central Railway Zone and South Eastern Coalfields Limited. Ever since the creation of Chhattisgarh, Bilaspur has progressed by leaps and bounds. Bilaspur is the third cleanest railway station of India. It is well known for handloom woven colourful soft *Kosa* silk saris and for its rich heritage and culture. This city has also developed as educational hub of Chhattisgarh. The place is a nice amalgamation of a fast developing city and at the same time of a region having natural beauty and spiritual importance.

Tourist spots in and around Bilaspur include:

*Ratanpur (Mahamaya Temple) – about 22 Km from the University and one of the Shakti peeth.

*Malhar - about 14 Km from Bilaspur rich in reminents of Temples (Pataleshwar KedarDevrani Jetharani etc.)

*Giraudhpuri - a religious place for Satnami and birthplace of Sant Guru Ghasidas having a monument called "Jaithkhamb" (Taller than Qutub Minar).

Route Direction

How to reach Bilaspur

By Train: Bilaspur is well-connected by Railways/Road transport, and situated on the Mumbai -Nagpur-Howrah route of the Indian Railways. Another nearby station is Usalapur.

By Air : Nearest airport is at Raipur (Swami Vivekanand Airport) which is about 126 Km away from Bilaspur City.

How to reach the University from Bilaspur city:

The University is located at Koni-Birkona Road which is approximately 10 km from the railway station. Prepaid autos are available at railway station charging around Rs. 100 for coming upto the University. Bilaspur also has city buses that ply regularly from Railway station to the University Main Gate.

Concept Note

Changing social, economic, ecological and political conditions of the world pose before us the idea of *Global Nations*. Everything including the food we eat, the television serial we watch, or the clothes we wear speak of the global-local interface. Our daily life is being affected by events that happen in any part of the world including the more fluid world of cyberspace. However, globalisation is happening, reassessing the national boundaries, and the question of national identity is becoming more vociferous. There are many who see globalisation as a dangerously homogeneous process which poses a serious threat to local or national cultures. They therefore indulge in emotional rhetoric of culture preservation. Thus dilemmas of globalisation are affecting the nations and their cultural identities inherently shared across national and many other boundaries.

The question of nation, culture and identity gains significance from the fact that a person's national identity results directly from the presence of elements like national symbols, language, colours, nation's history, blood-ties, culture, music, cuisine, and so on. Under various social influences, people incorporate national identity into their personal identities by adopting beliefs, values, assumptions and expectations which align with one's national identity. People, with the identification of their nation, view national beliefs and values as personally meaningful, and translate these beliefs and values into daily practices. In the modern day debate, various facets of national and cultural identity have been discussed in scholarly circles in almost every disciplinary area including literature, cultural studies, history, sociology, and political science. The advent of literary and cultural theories in the literary field has brought major changes in the way of reading, interpreting and understanding literature and culture.

The seminar looks for presentations that explore and investigate new meanings and assumptions regarding the nuances of globalisation, nation and the construction of identities, as well as papers that analyse the ideas, issues and theories related to the concept of Global Nations.

Possible topics may include but are not restricted to the following issues:

- Race, Nation and Ethnicity
- Nation, Border and Globalization
- Gender, Nation and Identity
- Education, Nation and Society
- Religion, Philosophy, Ethics and Cultural Identity
- Language, Society and Culture
- Trans-nationalism, Cyber culture and Information Technology
- Postcolonial Literature and Culture
- Postmodernism and Cultural Identity
- Diaspora, Nation and Identity
- Folk Culture and Literature
- Nation and Subaltern Narratives
- Cinematic Representations and Cultural Identity

CALL FOR PAPERS:

Interested participants are requested to send an abstract within 300 words and full papers, not exceeding 3000 words (excluding notes and references), to be submitted through e-mail by the last date as mentioned below to semeng2017@gmail.com Full papers with abstracts and short bio-notes of the author(s) should be mailed as a single MS word attachment, font size 12 in Times New Roman with 1.5 line spacing. Participants are requested to adhere strictly to the guidelines provided in the MLA handbook (latest edition).

Publication: The papers will be blindly reviewed and those selected by the editorial board will be published in an edited book by a reputed publisher with ISBN.

No TA/DA or any other allowances will be provided to the participants for attending the seminar.

Deadline for submissions :

Submission of abstract: 25 January 2017

Notification of acceptance (on or before): 30 January 2017

Submission of full paper: 05 February 2017

Payment of registration fee: 05 February 2017

Registration Fee:

Registration fee includes: Tea/coffee, lunch on both the days, and Seminar Kit.

Faculty	1000 Rupees
Research Scholars / Students	500 Rupees

In case of seminar presentation made by joint authors, each of them must get registered separately.

The registration fee may be sent via online transfer/ NEFT/ cash deposit/Demand Draft to

Name of a/c - Seminar Convener English

Account No.: 58100100000262

BANK OF BARODA

BIRKONA BRANCH

IFSC code: BARB0BIRKON. (Fifth character is zero)

Note: Delegates are requested to make their own arrangements for accommodation. However, assistance will be provided to find adequate hotel /guest house accommodation on prior request.

आमंत्रण

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

एक दिवसीय संगोष्ठी

दिनांक : 26 जून, 2019
समय : 02:00 से 05:00 बजे

विषय

नई शिक्षा नीति में शिक्षक प्रशिक्षण एवं दूरस्थ शिक्षा

- मुख्य अतिथि -

प्रो. गौरी दत्त शर्मा
कुलपति
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

- अध्यक्ष -

डॉ. बंश गोपाल सिंह
कुलपति
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- विशिष्ट अतिथि -

प्रो. आर.पी. दुबे
कुलपति
डॉ. सी.व्ही. रामन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

प्रो. राजश्री वैष्णव
प्राध्यापक
आई.टी.एम. विश्वविद्यालय, नागपुर (महाराष्ट्र)

इस समारोह में आपकी गरिमामयी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

- कार्यक्रम स्थल -

परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन, विश्वविद्यालय परिसर
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

कुलसचिव